```
[ 849 ]
भात्रयू — भात्रयू गमी विश
সর্যু — [সর্যু] নদী বিং,( যু)বায়ু, বাত।
অহংযু —অহস্কৃত, যোদ।।
णक्षवू —रङ्क्षिण्ड बाजान, शांगकाती, अदिक्।
           অজু—অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
भामतञ्जू—इस्टीत-ठत्रगं दक्षनं मिष् ।
          আজু—অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।
আজু—বেতন বিনা কর্ম্ম করা, (দেং) অদ্যু, মাতামহ ।
বাজু —(দেং) অলকার বিং।.
           আজু-অন্ত। (৩) ত্র্যকর!
তরাজু-নিজি, দাঁড়ি, পালা।
           रेक्-- जस । (२) माकात।
ঋজু—সরল, অকুটাল।
          ইজু—অন্ত। (৩) ব্রাক্ষর।
অনৃজ্ — কুটিল, অসরল, বক্র, শঠ, ধূর্ত্ত।
            উজ- शक्त । (२) भाकता
যুযু — ঘোটক, বাজী, ভয়।
```

জে। (১) একাক্ষর।

সজে—অন্ত। (২) দ্ব্যক্ষর। হঞ্জে—নাট্যে-ভূত্যার প্রতি স্ত্রীলোকের সম্বোধন শব্দ।

রুজু—(যাং) লিপ্ত, উত্থাপন।

य-(गार) विद्राय वा कि वा वस्त, यादा।

জওজে—(বাং) পত্নী।

'জো। (১) একাক্ষর।

যো—উপায়, স্থবিধা, মূলধন, পুঁজি।

এজো—অন্ত। (২) দ্ব্যক্ষর।

কেজো—(দেং) কার্যোপযুক্ত।

সেজো—(দেং) মধ্যম ব্যক্তি, যথা মেজো দাদা খুড়াদি।
সেজো—(দেং) ৩য় ব্যক্তি, যথা মেজো দাদা খুড়াদি।

(का — (तिर) भ्य योक, यथा (माका काका श्रृणाका को। (১) এकाक्षत। को—[यो] तिर, लोका, लो।



य। (১) अकाकत। -রহম্পতি, দৈত্য পতি, ইন্দ্র, নষ্ট্র, নিদ্রিত, জিহ্বা, কুচমগুল, বামা, ষড়গ্লত, নাদ, জল, ধনুহস্ত, কুজ, দীর্ঘ বাহু, বল, বিক্রম, রূপ। शः - গত मित्न, विशंख मित्रम, शूर्क मित्न। অঝ-অন্ত। (২) ঘ্যক্র। যার্য —(ধা) উক্তি-বার্যারা, বার্যারী,বার্ষাত।

वक -यान, भक्छे, वाइन, गाड़ी। সহ - সহনীয়, সহন যোগ্য, উপযুক্ত, শক্ত সমর্থ, স্থান্তা অহ্ - পুজা, মান্য, যোগ্য।

গহ -- নিন্দিত, দৃষ্য, নিষিদ্ধ, জঘন্য। অঝ — অন্ত। (৩) ব্রাক্ষর। অসহ্য-অসহনীয়, যাহা সহ্য করা যায় না প্রাসহ্য --বলাৎকার, হঠাৎ, অকস্মাৎ।

ত্রা — অন্ত। (৪) চতুরক্ষর। অভিসহ্য-গর্বিত রূপে, প্রচণ্ড বেগে।

আন-অন্ত। (২) দ্বাকর। মাঝ —মধ্যস্থল, ভিতর।

वाश-श्रीकार्या, श्रहण त्यागा, जामत्रभीत, उंशादकता বাহ্য - বহনীয়, বহিঃস্থ, যান, বাহন, (দেং) বিষ্ঠা।

गोश-अका, शिल, (याना।

```
আঝ-অন্ত। (৩) ত্র্যক্র।
অগ্রাহ্— গগ্রহণীয়, ভুচ্ছ, হেয়।
সন্নাহ্য — যুদ্ধোপযুক্ত হন্তী, সন্নাহ যোগ্য।
বিবাহ —বিবাহ যোগা, বহনীয়, বর, জামাতা।
           আকা-অন্ত। (৪) চতুরক্র।
অবুগ্রাহ্য - যাহার প্রতি অবুগ্রহ করা যায়।
উপগ্রাহ্য —উপঢৌকন, ভেট, ডালি।
পারিণাছ-পরিণয় লব গৃহ সামগ্রী-শয্যা বাসনাদি।
লোকবাছ—আচার ভ্রষ্ট, লোকবহির্ভ ত, সমাজচ্যুত।
রাজবাহ্য —[উপবাহ্য] রাজ বাহক হস্তী, ইত্যাদি
 অভিবাহ্য-দান,উৎসর্গ, যান,স্থানান্তর করণ।
বালবাহ্য - বন্য ছাগল, বালক বহনীয়।
           আবা—অন্ত। (৫) পঞ্চাক্ষর।
 অপরিগ্রাহ্য — যাহা গ্রহণের যোগ্য নহে।
 উপসংগ্রাহ্য — तन्मनीय, অভিবাদ্য, প্রণম্য।
            इंस-अछ। (२) घा करा।
 গৃহ্য —গ্রহণের যোগ্য, অধীন, আয়ত, দল ভক্ত।
             ইঝ-অন্ত। [৩] ত্রাক্ষর।
 প্রগৃহ্য —ব্যাকরণের পদ, সদ্ধি রহিত পদ, গ্রহণ যোগ্য
 ঐতিহ্য-পরস্পরাগত বাক্য।
            ইঝ-অন্ত। (৪) চতুরকর।
 আর্যাগৃহ্য — নাপুগণ পূজিত, সজ্জন সম্মত।
```

```
গুণাছা —গুণের পক্ষপাতি।
পরিগৃহ্য — গ্রহণ যোগ্য।
           উবা—অন্ত। (২) দ্যকর।
উদ্ৰ্—(ধা) ত্যাগ-উজ্বন্তী।
छेश — जशाश्यां।
खरा - गांभनीय, मलदात, छेपस, निर्धन, सान, पछ।
ছহ্য — দোহনের যোগ্য।
          উঝ — অন্ত। (৩) ত্র্যক্র।
লমূহ্য —তর্কনীয়, তর্ক করিবার যোগ্য; মজ্ঞাগ্নি।
          এক-অন্ত। (২) দ্ব্যক্ষর।
লেহ্য —জিহ্বাদার। আশাদ্য, লেহনীয়, অমুত।
           ওঝ-অন্ত। [২] দ্বাক্র।
গোহ্য-গোপনীয়, মলদার, দন্ত, কচ্ছপ, পরমেশ্বর।
पादा-पाद्यतं त्यागा ।
            ঝা। (১) একাকর।
ক।-[কাঁ] বন্ধ্যা, অফলা।
          অবা—অন্ত। (২) দ্যুক্তর।
ঝকা — কড় রুষ্টি, বাত্যা, কড় ধানি বিং।
          অবা। — অন্ত। (৩) ত্রাক্ষর।
সমহ্য।—খ্যাতি, কীর্ত্তি, যশঃ।
        . আঝা—মন্ত। (৬) ত্র্যক্র।
छेषाञा-छेषां द्यांगा कना।
```

আবি-অন্ত। (২) দ্যক্ষর। भाकी-(पार) गांविक, कर्पशात । আঞি—অন্ত। (৪) চতুরকর। মাঝামাঝি-ভিতরে,মধ্যস্থলে।

(स। (S) अक्। काता বাহ্যে—বহির্দেশে, প্রকাশ্যে।

ইবি- গন্ত। (২) দ্বাকর। विकी-विवि (शाका)

মাঝে —,ভিতরে।

ইবি-অন্ত (৩) ত্রাক্র

ভাইবি-ত্রাতাঃ বিন্যা ।

ত। (১) একাক্ষর।

ট। (১) একাক্ষর।

ট —শব্দ, পাদ, চতুর্থাংশ, মহাদেব, বামন, ত্রিভুবন,
বিখ্যাত, টক্ষার ধ্বনি, করক।

টং—(ইং) ক্রিহ্বা।

অট—অন্ত। (২) ঘ্যক্ষর।

অট—অন্ত। (২) ঘ্যক্ষর।

অট—(ধা) গমন—অনট, অটুট, কুলটা, অটবী।

কট্ —(ধা) আচ্ছাদন—প্রকটন, কটু, গমন—কণ্টক।

ঘট —(ধা) চেপ্তা–ঘটন, ঘটা, ঘটক, দীপ্তি–ঘণ্টা।

চট্ —(ধা) একত্র করা, জটা, জুট, ধূর্জ্জাটি।

বাট্ —(ধা) একত্র করা, কুজ্বাটিকা, (দেং) ছরা।

টট্ —(ইং) ধারণ করা।

তট্ —(ধা) উচ্চ হ—তট, তটিনী।

থাট্ —(ইং) চিস্তা।

नष् -(४।) नृज्य-नष्टन, कून्छे, नहे,न छै, नाष्ट्रक ।

ফট্ —সর্প ফণা, অব্যক্ত শব্দ, ষোণ বিং।
ক্ষট্ —(ধা) বিদীর্ণ করণ-ক্ষটিক, আক্ষালন।

शहे - (शा) शांखि, त्रक्षेत-शतिशां है, छेरशांहेन, शहे,

বট্ —(ধা) বেষ্টন-বট, বাটা, বাট, বটুক,(ইং)কিন্ত । বট্ —(ধা) উক্তি-বটু,চৌর্য্য-বটর,ভাগ-বন্টন, বন্টক।

পট, পটোল, পটহ। (हेर) घंछी, हाँड़ी, शाब।

अष्ठे -(हेर) कक।

```
गरे-गद्ध।
ভট --(ধা) বেতন,পোষণ ক্ল-ভট, উদ্ভট।
त्रष्ठे -(४।) कथन-त्रष्ठेन, त्रष्टेना ।
नरे -(हर) जागा।
শট —(ধা) প্রশংসা-শটিত, শাট, শটা, শটান ।
यह -गःशा विः [७]।
गर्छ -(४।) जनसन, जल्म क्र-गर्छ, गर्छ, गर्छन, गर्छेड।
अपे -(भा) वभ, लखन-अपेन, अपे। तिका।
খট —(ধা) আবর্গ-খটা, খটিক।
কণ্ট -(ধা) গ্রমন করা, প্রাপ্তি।
वल (४।) वल्डेन कता, जश्म त्र-वल्डेन, वल्डे ।
गर्छ -(हेश) (वँ८७, नाष्ट्राष्ट्र ।
र्क -(यार) गतिया याख्या, ज्कार याख्या।
७ल्फे —(हेश) शिलान।
অট —(ধা) গমন করা, ভামণা
कछ - रखीग ७, माजूत, कुमामन, कर्ण, मात्र, ममस, मतारे।
     — তুগ, অন্ধকুপ, টক্ক, প্রহার বিং, লাক্ষ্ম, কফ।
च छ - शक्कु छ, शामरताथ, कु छ ता शि, कल म, शति भाग वि
তট —কুল, তীর, সারু।
 ধট — তুল, নিজি, দাঁড়ী।
 নট - নর্ত্তক, অশোক রুক্ষ, বর্ণশঙ্কর জাতি বিং।
 পট --বস্ত্র, চিত্র, ছবি, ছাদ, রুক্ষ বিং।
क छ - कि जिल्हा किया।
```

আট—অন্ত। [৪৭১] হ্বাক্ষর।

বট —রক্ষ বিং,বড়গাছ,কড়ি,বড়া,রহৎ রজ্জু, বেঁটে।

নট —প্রমাদ, বাচী, জনবহিত্ত, পাগল।

মট —জটা, কেশর, শিখা।

আট —অটালিকা, প্রামাদের উপরিভাগস্থ গৃহ।

অট —গুল্ধপ্রহণস্থান,কুত্ঘাট (ধা)চলন–ঘটা,সংঘটিত।

পট —প্রেমণার্থপ্রস্তর,পিঁ ডি,টাল,পীঠ,জম্যাদির পাটা।

অট —স্পণ্ডিত,মীমাংসক,অধ্যাপক,ভাট,শক্র,স্বামিত্র

নট —ম্পণ্ডিত,মীমাংসক,অধ্যাপক,ভাট,শক্র,স্বামিত্র

লট —হটি, কর বিকর স্থান।

লট্ব —বর্গসঙ্কর জাতি বিং, অন্থ, রাগ বিং, লাটুরা।

ঘট —শাকাদি মিশ্রিত ব্যঞ্জন বিং।

বণ্ট —গংখা বিং [৮]।

—ক্লেশ, ছঃখ, যত্রণা, ক্লিপ্ত, কুৎসিত, গহন।

—্বিষ্ট্রী ক্লশীকত, চাঁচা ছোলা, পরিষ্কৃত।

—বংশিত, যাহাকে দংশন করিয়াছে।

— যাহ। ছুই উৎকৃষ্টধাতুতে খাদ মিশ্রিত হয়-তাম

—নাশপ্রাপ্ত, ধ্বস্ত, গত, পলায়িত, দূবিত।

–ব্যক্ত, স্ফুট, প্রকাশিত, স্থবোধ। –হ্যুত, অধার্ম্মিক, দোষ বিশিষ্ট।

-দন্ত, রুদন, বড় দাঁত।

বেকট —মৎস্য বিং, যুবা, বিদূষক, জহুরী।
ভাকট —[ভেকট] ভেট্কী মাছ।
শকট —গাড়ি, অসুর বিং।
সকট —শাখোট রক্ষ, শেওড়া গাছ, নীচ, মন্দ।

কট —প্রকাশিত, ব্যক্ত, ম্পষ্ট, প্রচারিত, বিশিপ্ত

निक्छे - गगीश, अनुत।

শাকট —শকট সম্বধীয়, যুগা, যুগাবাহী পশু।
ইকট —উকুন বিং।
কক্ষট —উরুশ্ছদ, কবচ, বর্মা, মাঁডেমায়া।

गक्र चित्र प्रकृति । प्रक

मक्छे - वानेह, गांक फ़्गा, विस विः, शफ़्शिला लक

ইৎকট —রক্ষ বিং, ওকড়া গছ। উৎকট –বিষম,তুঃসাধ্য,শব,রক্তইক্ষু,তেজপত্র,দারুচিনি निर्घे - त्यथारन वह्नाकं ममत्व इस् हारे वाकाता कि शार्घ -- शार्छ, धृलि। शिष्ठि - गीमा, तार, त्नव ताम विर। क्कंड - जनज गांक विर, कांठजा माग । शिक्ष छ - त्वज्ञान, शिक्षि ।

অতট —শৈলাদির উচ্চস্থান,ভৃগু,নত্তাদির আড় লি। পাত্রট - কুশ, ক্ষীণ, জীণ বস্ত্র। ताजारे - निशाहत, छोत । মাথট -(দেং) বহুলোকের নিকট অর্থ সংগ্রহ, চাঁদা

क्षि

कक्र े — खार्डा ९ शल, भाषा सुषि। মন্দট —প্রবাল রক্ষ, নিম গাছ, প্রবিভদ্রক। निर्केष्ठ - महा मृत्रा, निष्ट्रारहाजन, शहनिमाहक, मछ।

—বঞ্চনা, শঠতা, চাতুরী। চাপট — চাপড়, চড়।

```
[ 898 ]
দাপট —প্রতাপ, প্রভাব।
চম্পট - (দেং) ना বলিয়া চলিয়া যাওয়া, প্রস্থান।
লম্পট —লোচ্চা, আসক্ত, কামুক, লোলুপ, বকুলগাছ
लिम्मार्छ -लम्मार्ड, कांमूक।
কণ ট --পুরাতন বস্ত্র, ছেঁড়া কাপড়।
      —চাপড়, বিস্তার।
क% विश्व
পর্ণ ট -- ক্ষেত পাপড়া, পাঁপর।
অবট -গর্ভ, গহার, কুপ, ঐক্রজালিক '
দেবট — শিল্পী, শিল্পকর।
রেবট — দক্ষিণাবর্ত শব্ম, তৈল, কদলী তরু।
विश्वष्ठ - गर्वश, गतिया।
উর্কট -যে অধিক পরিমাণে গমন করিতেছে-বৎসর
कर्के - कूज नकत वा आग।
খর্মট -কুবেরর নিধি বিং, শল্প বিং।
जर्जा — त< गत, त इत ।</p>
पर्वा — बात्रशाल, बात तक्क क, श्रांखिशाती।
मार्खि - ि हिन्छा-गृह, मञ ভবन, मञ्जना कतिवात गृह।
वर्का -- वर्का कला है, ताल भाष।
বার্লট —নৌক। প্রভৃতি জল্যান, বহিত্র,তর্ণী, তরী।
উদ্ভট - याशत উচ্চ गन, উৎকট, थां छ, पूर्या, कूर्या।
চৰ্ডট --কাকুড়।
 पट्ठे - निर्शालश, निर्द्धन द्यान।
```

```
অট—গন্ত। [ ৪৭৫ ]
                                        बाकता
निर्छि - कठिन, पृष्, कटिशत ।
বার্ডট -কুম্ভীর, নক্র, গ্রাহ।
छम् --(प्तर) धीयकाल, উত্তাপ, गर्बि।
কট্মট -[চট্মট] (দেং) ভয়ানক, ছুরুহ, শক্ত !
নর্দ্মট -রবি, খর্পর, খোলা, খাপ্রা।
করট —কাক, ক্লকলাষ, হাতির গুঁড়, নাস্তিক,কুমুম
कुत्र है - हाभात, मूठी।
চুরট — শুক ভাজকুট নির্শিত ধুম পানার্থ দ্বব্য বিং 🏻
शूत्र - यूवर्न, त्माना १
शूत्र - मूजिं , शूर्व।
वत्रे -कीं विर, वाल्ठा, ताज्रहरम, कूल पूष्प।
বারট -- ক্ষেত্র, ক্ষেত্র সমূহ।
বেরট —নীচ জাতি, বর্ণসন্ধর জাতি!
বোরট - कुम्म পুষ্প, कूँम ফুল।
ভরট —কুস্তকার, ভূত্য, নদীর চরস্থ জমী।
 रगांतरे - जरकार्र शूष्प, रेक्स्मृल, १ प्रिनत रामा प्रश्न !
 শরট - क्रुकलाम, कांकलाम।
 गत्रे - क्रुक्लाग, वांबु, (भव, भधुमिक्का।
 সারট —টিক্টিকী ও তৎ সাদৃশ জীব, গোধা প্রভৃতি।
 कलि - शृशिक्षामन, घटतत हाल।
 कूल छ - जात्र ज, शृर्छ।
 তুলট -(দেং) হরিতালাকু কাগজ, বিং।
```

```
बाकत
      — अछास गर्षि, काशी।
খন্তট
কেশট —বিষ্ণু, ছাগ, উকুণ,ভাতা, স্মরপোষণ বাণ।
खोयरे — (मरवारमर्ग इंगिम श्राम्पत गर्व।
অউট — অতিশয় চীৎকার বা উচ্চ হাস্য।
আর্ট —ভারতবর্ষের উত্তর পশ্চিমস্থিত দেশ,পঞ্জাব।
ঘর্ট — "ঘূর্ঘর" শব্দকারী, পেষণ যন্ত্র, জাতা।
मध्यके - स्थलन, त्यां कन, घटना, त्यां हेना, शर्टन।
रेनक्छेर - निक्छे व, मांगीशा।
উৎকটা —কোশ, ছঃগাহসভা; কঠিনভা।
ष्पर्षेत - याश परवेना।
কাপট্য —কপটতা, শঠতা, শাঠ্য।
লাম্পট্য —লম্পট্তা, কামুক্তা, পর স্ত্রী প্রবৃত্তি।
ত্রিকণ্ট —তেকাটাশিজের গাছ, টেন্সরা মাছ।
নির্ঘণ্ট —গ্রন্থের সুচিপত্র, অনুক্রমণিকা।
সমন্ট -- কর্কটা বিং, একপ্রকার কাঁকুড়।
यूकाहे - वन् यूगा
गम्छ - काग्राम, मरलभ, मर्शिष्ठ।
প্রবৃষ্ট -বিনষ্ট, লুগু, অপচিত, অপহত।
বিনষ্ট —মৃত, গভ, অতীত, পতিত।
অপষ্ঠ — অঙ্কু শাগ্র ভাগ, অস্পষ্ঠ।
       —वनमूर्ग, मूर्गानि।
ग्राष्ट्र
অম্পষ্ট —জড়িত, অপ্রকাশ্যা।
```

```
[ 899 ]
 অট --তান্ত।
বিষ্পান্ত —ব্যক্ত, প্রকাশিত, স্ফুট।
সুস্পাষ্ট —অতি ক্ষ্ ট, প্রাকট, অতিশয় স্পাষ্ট্র।
প্রভাষ্ট —পতিত, নষ্ট।
আড়েষ্ট -(দেং) অবশ, স্থর, বিহবল।
          তাট-তান্ত। (৪) চতুরকার।
कारकानष्-(इर) नातिरकल।
इक्क १ -(हर) माराज।
টাপট -(দেং) পরস্গার জড়ীজড়ি, পরস্পার যুদ্ধ।
वक्ष्रली -(इर) रिमक्षक लवन ।
विकछहे -(देश) सूर्कि।
ধৌতকট —ধোকড়া, গোটা স্থতার থলিয়া, ব্যাগ ।
শুতিকট —প্রায়শ্চিত, পাপ শোধন, মর্প।
मनक है -शांक, मख माजक, मरना १क है।
অপ্রকট —অম্পষ্ট, অপ্রকাশিত।
```

অবকট —বিপর্যান্ত, বিপরীত, অভিমুখ, বিরোধ 🕽

প্লক্ষট —শক্ষা হেতু যাহার যাংস গক্ষোচিত হয়,ভীরু

অবিকট —অবিস্তত, অকুৎগিত, গেষ সমূহ।

छेगाक छ - इतिजा वा गगिनात छ:।

তিলকট —তিলচুর্গ, তিলের গুঁড়া। বিকল্পট —গোক্ষুর, গোক্ষুরী লতা।

উরকট -- যজেপিনীত।

কটকট --গণেশ, জগি।

কুলোংকট — শ্রেষ্ঠ ঘোটক, উত্তম কুলে জাত।
ধর্মঘট — উৎসর্গ কলস, ঐক্যমতাবলহন করা।
জটাজুট — জটাসমূহ, সংহত কেশ।

জটাজুট —জটাসমূহ, সংহত কেশ।
পিকজট —শিব, মহাদেব।
একনট —প্রধান অভিনেতা, তত্ব্বধারক।
মহানট —শিব, মহাদেব।

ক্টাট — কৈরতী মন্তক, কেগুর, শ্যোনাক রক্ষ।

অকপট — চাতুর্য হীন, কপটতা শূন্য, সরল।
পটাপট — (দেং) চপেটা যাতাদির অব্যক্ত শক্ষ।
কাঞ্পট — কালংহ ভার যুবনিকা।

কাগুপট —কাণাৎ, তাঁবু, যবনিকা।

তিরগট —বে বস্তা খণ্ডের উপর চিত্রপট আঁকা যায়।

নান্দীপট —কুপাদির মুখ বন্ধন ও তদাচ্ছাদ্ন।

চাপপট —পিয়াল বক্ষ।

অবিপট —কম্বাদি।
ধনুপ্পট — ডিপ্রট পিয়াল ব্রক্ষ।
তপোবট — ব্রদ্ধাবর্ত্ত দেশ।

জাবাবট — ২য় পিতা কর্ত্তক স্বর্ণাতে উৎপন্ন পুত্র।
তৈল্বট — ব্যবস্থা লইবার জন্য দেয়ে অর্থ।

প্রতিভট —প্রতিপক্ষ, বোদ্ধা, বিপক্ষ।
চারভট —বীর গুরুষ, যোদ্ধা।

[898] সুরেভট --একপ্রকার সুপারি গাছ। রাত্রিমট - রাত্রিচর, রাক্ষম। व्यवपर्षे - गर्छ, विवत । শকু পউ 🔝 দণ্ডপলাদি চিহ্নিত শক্ত দণ্ডের আধার ताज्य पढ़ - मिन विर, किती है, ताज मनन । বক্ত পউ - অশাদির মুখ বন্ধ শন্যপূর্ণ থলিয়া,তোব উ তাএপট —তাম কলক। গৌরীপউ —পেনেট, শিবলিজের নিম্নস্থ পটা। স্থলপট —কাপাস, কাপাস গাছ, তুলা।।

শৈলাপউ —পেষণার্থ শিলা, শিল ! বাণভট —কাদ্ৰরী, গ্রন্থক্রা। কর্মট —গুবাক রক্ষ, সুপারি গাছ। ৰসুহউ

—বক রক্ষ, বক ফুলের গাছ।

অকাপট —কণ্টতা শূন্য, উদার্য্য, সরল ভাব বক্কণ্ট -কুল গছে। শাখাকণ্ট —সুহী রক্ষ, মনস। সিজ । ভুজাকণ্ট —হাতের নখ। মালাকণ্ট - অপামার্গ রক্ষ, আপাং গাছ। পরিজ্ঞ --পতিত, চ্যুত, নষ্ট।

অবিম্পাষ্ট -- অম্পাষ্ট বাক্য। একদংষ্ট্র - গণেশ, লখেদর। Dक्रमर छे --[বक्रमर छे] याशत तक मुख आहर, भूकत

```
তীক্ষদংষ্ট্র — ব্যাজ, বাঘ।

সর্পদংষ্ট্র — দতী রক্ষ।

হিরদংষ্ট্র — সর্প, বরাহ রূপী বিষ্ণু।

ব্যালদংষ্ট্র — গোক্ষুর, গোক্ষরি লতা।

তাদিংষ্ট্র — জল জান্ত বিং, হালর, মকর।

তাট—জন্ত । [৫] পঞ্চাক্ষর।

তাতিবিকট — মত হন্তী, ভ্যানক, ত্র্মুর্ম।

বাজ্যাকট — বজ্গীয়রথ, কলের গাড়ী।

শাক্ষাকট — মাকের থেত।

মূলশাকট — মাকের থেত।

মূলশাকট — মুল ক্ষেত্র, মূলা প্রাভৃতির ক্ষেত্র।

বজ্বক্ষট — ক্বচ ধারী, বন্দ্রী, সরাহ বিশিষ্টা।
```

ব্যু চকন্ধট — সরদ্ধ, সরাহ বিশিষ্ঠ, সাঁজোয়া পরা।
গিরিসন্ধট — পর্বত শ্রেণীর মধ্যন্থিত শংকীর্ণ পর।

शक्षमभि -निर्हाल, आक्षामन,विष्टानात हामत।

পঙ্ককর্মট -- নরম মাটা, পলিযুক্ত ভূমি !

ত্থলসন্ধট — যোজক, ভূকন্ধরা। তিলপিচ্ছট —তিল পিষ্টক, তিলকুটা।

जानम् १ -- नरवाहात रख ।

याशिक छ - अहती, कि कि नात ।

```
সাতৃকেশট — মায়ের ভাই, মায়া, মাতুল।

মাধুকেশট — মায়ের ভাই, মায়া, মাতুল।

মাধুকেশট — নাজা বিক্রমান্দিত্যের নবরত্বের এক রক্ত্র

বার্ঘরউ — বারু দ্বারা যে ঘরটের কার্য্য সম্পন্ন হয়

বারিঘরউ — বারি দ্বারা যে ঘরটের কার্য্য সম্পন্ন হয়

জলবরউ — বারি দ্বারা যে ঘরটের কার্য্য সম্পন্ন হয়

জলবরউ — পানী বসন্ত, পান বসন্ত।

অাট—অন্ত। (২), দ্বাক্ষর।

ক্যাট্ — (ইং) বিড়াল, মার্জ্ঞার।

নাট্ — (ইং) কিন্তু।

ক্যাট্ — (ইং) কিন্তু।

ক্যাট্ — (ইং) মাতুর।

বাট্ — (ইং) মাতুর।

লাট্ — (ইং) মাতুর।

লাট্ — (ইং) আসসমূহপুচকসংজ্ঞা, (ইং)উচ্চোপাধিবিং
```

शां े -(हेर) वितां छि हेशि।

আাকু —(ইং) অভিনয়, আইন 1

র্যাণ্ট্ —(ই১) পিপীলিকা, পিঁপ্ড়া।
আন্ট্ —(ইং) শূকরের ডাক, মঞ্রী।
চ্যাণ্ট্ —(ইং) বাজের ডাক, গীত।
গ্রাণ্ট —(ইং) ছোট গাছ, চারা গাছ।

जान -(हर) (क्रिंत, शूज़ी, शिनी, मानी हेला मि।

कारे -(इर) जां जिर, जिरक्र कराथता।

```
সাট—সন্ত। [ ৪৮২ ]
न्ना छ - नरशा विर [ ।
थां े - अनमां थंड, जानात, (त्नर) कुष्क, श्रवी, श्रेष्टा।
गाँछ -(प्तर) गिता, त्यां , वस्ता।
ৰাট —(দেং) দোম,কসুর,নজাদিতে অবতরণ স্থান।
कार्छ -(दमर) शत्रामित शमाया छ, दहात, मम मह शामा
বাট -- নিক্স, বন, ক্ষত ঘা পরিষ্কার, শীঘ্র, লোম।
টাট -(দেং) তাম নির্দ্ধিত পাত্র বিং।
आहे - (कामही, (वर्षी, थिलामा, आहीत।
नांहे - गुछा, नांहेकामित अंखिनस, क्लींहे प्रभा
বার্ট - পথ, বাড়ী, আরত স্থান, রতিস্থান।
वाँ है -((मर) शक्त छन, थड़ा। मित मूष्टि।
ভাট -(দেং) বর্ণসঙ্কর জাতি বিং, স্কতিপাঠক।
लां छे - पा । विश् तथा वाका, वक्क, तिकवा कि, मिनर
শাট -পরিশের বস্তু, শাড়ী, ধৃতি ইত্যাদি।
राहि -((मः) गः क्लाश, अल्लाश, केन्निछ।
शांचे -((पर) वाकात, इसे, क्य विकासत शांन।
कांचा -(त्रः) উल्लखा, थडनीय ।
नां ज - नुका, भीक, वामा वह किन, नर्ष ममूद ।
পাট্য -পাট শাক, নালিতা।
काली - अगासारम श्राष्ट्रण, काथ विर, कामास विर
शार्व -(हरं) अरम ।
भाषे - (हर) काशिक, शितान।
```

कलें कि — (हर) कृष्टि।
• (डकाने - (हर) मृत्य, भावा।
• ज्ञार्ट् — (हर) जा कि ।
• (ड्रा) के नि ।

शाकां - हिक्क इ शाह ।

लाकाहे — (हर) शहलाल, छाउँ काडि। धाकाउँ — शुक्क, नित्रम, वाटक कार्छ।

চকাট —বে প্রামেং বেড়ার, সাপুড়ে, ধূর্র, স্বর্ণমুদ্র।
তকাট —মন্থন দণ্ড, বে গমন করে বা থাকে।
ক্রুকাট —(দেং) তুরারের কপালি, টৌকাট।

শুলাট —ভৌরাস্থা, জনকটক, পানিফল,পর্কত বিং

শলটি —শকট পরিমাণ, এক গাড়ি পরিমিত দ্রব্য। শৈলাট –সিংহ,ব্যাধ,পার্কতীয়জাতি,দেবদেবক,ক্ষটিক

प्लांशांके —गांध,वांदकात तहन। विः,ভ७,देवज़ांशबङीक

নোরাষ্ট্র — সুরাট্ দেশ ও তদেশীর লোক, কাংস্য।

ভাট — অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
পৃষ্ঠবাট্যুগপার্থগ র্ষ, যে র্ষ পুর্টে বোঝা বয়।

শলাট --কপাল, ভাল, অনৃষ্ঠ।

নিশার্ট —নিশারর, পেচক, ভূত, চল্র ।

स्ताहे - लोबाड्डे, स्वारे पन्।

व्यर्थतार् -यूग्रशार्श्य द्वामि,

```
जारि--वासा [ ४५७ ]
                                   চত্র শর
यगताहे - यम, क्छान्छ, भगन, कालान्छक।
गनूता हे - कूटवत, वक्ताक।
ज्तामारे -रेख, शूतकता
একজ্যাক্ট —(ইং) ঠিক্, অবিকল।
इनकालि -(इर) निरा
ব্রেকফার্ট -(ইং) প্রাতর্ভোজন।
 দার্কাঘাট —যে দারু আঘাত করে-কাঠঠোক্রা পাখী
অবনাট — অবনত নাসিক, যাহার নাক খাঁদা।
 প্রাট —চক্রমর্দ রক্ষ, চাকুন্দিয়া গাছ।
 ককাপাট —কৌপীন, কপ্প।
 ममूर्थां - छन् ना न ।
 চক্রবাট —দীপাধার, পিলমুজ।
 অক্ষবাট — যুদ্ধকেত্র, কুন্তির স্থান।
 यक्तवां चित्रक्षांन, यक्तवृति।
 হব্যবাট — হতভুক্, অনল, অগি।
 বর্ক রাট -কটাক্ষ, নায়িকার স্তনে নায়কয়ত মধ কত
 মুগরাট -পশুরাজ, সিংহ।
 গুজরাট —ভারতবর্ষের দক্ষিণ পশ্চিমস্থ জনপদ বিং
 অদিরাট —গিরিরাজ, হিমালর পর্বত।
 ইভরাট —এরাবত হস্তী, হস্তিরাজ।
```

भानगां -(भा) लाका, आकाता ।

कत्रहारे _. मर्ग विर, अन्न थाङ्जित म्ल, रामन द्वार ।

চক্রপদ্মাট -চক্রমর্দ্দ রক্ষ, চাকুন্দিরা গাছ! · जमकितां जिल्लाह, जम असा ্র আট—অন্ত। (৬) ষড়ক্ষর। গ্রিভিয়াছহাট্ —(ইং) গুরুতর জধম।

ইট—णछ। (२) घुकत। िष्ट —(धा) <धात्रवक्त-(ठाउँ, ८ठाउँ, ८ठाउँन। ষ্ট্রীট —(ইং) রাজপথ।

निष्ठे —शाष्ट्री मुखा, (हेर) निकि, शतिकात । किं (३१) পরিমাণ বিং, উপযুক্ত।

विष् -(भा) शालि प्त-विषे, विषेत, विष्ठि, विषेत ।

विष् -विष्ठी, मल, शूनीय, कमा, देवना जाकि, मानव।

1 .866 } इंग्रे-शहरा वीष्ट्र -(देश) प्रेकता, वीष्ट्रेशालय, श्रदात कु । भी हे -(हेर) भारम, माकांक, थाना। विष्ठे —(हेर) वाङ्कत, (भाषा विक हे का नित छ। का । लिं —(देश) ठां पत्र, विगया थांका । विष्ठे --(४।) जनामत-विका। প্রীচট্ট —(ইং) পুরোহিত। किंगे -(हेश) हक्मिक भाषत । किष्ठे —(हेर) ভোজ, मूष्टि। বীষ্ঠ —(ইং) পৃশু। রিষ্ঠ —(ইং) কবজী। -(पर) मक्ष मुखिका। (हर) हेश।

की छ - क्रिंग, ल्लाका, कठिन। দিট - শক্র, দেখী, দেষ, শক্র ভাবাপর। ि — लिंगे निक्ति, ठाल, कृष्ठित, वित्कां ।

विष्ठे - नम्प्राचे, नवन दिर, पर्वा विर, शिवत विर, शार्थ । किए - विष्ठी, मन, धाजूमन, देजनामित कार्रेषे।

कुष्टे - कर्षण कता, हमा क्लाब, जाकुष्टे। श्र । – যাহ। ঘষা বিগয়াছে, মার্জিত।

ইপ্ত -বাঞ্ছিত,প্রশংসিত,পূজিত,যজ, কাম, এর গুরুক।

স্থ - নির্দ্মিত, ক্লভ, অধিক,মিলিত, ভূষিত। मिष्ठे - काल, जागा, जेशिवहे, जामिहे, कथिछ, शमनिक

षिष्ठे - याशास्त्र (षष कत् यात्र, जाञ, जाता।

क्रिष्ठे - क्रश, कीश, कान्छ, क्रम। सिट्टे - अक्टो, अलाहे, बनाक, सान, अलाहे ताका। গ্রিষ্ট —আলিঙ্গিত, সংঘুত, গ্লেষ যুক্ত, অনেকার্থবাচক শিষ্ট —শান্ত, বিখ্যাত, গোষা, অবশিষ্ট, মন্ত্ৰী হাষ্ট্র - সন্তুষ্ঠ, পুলকিত, রোমাধিত।

পিষ্ঠা — স্থান, গৃহ, নক্ষত্র, অনল, ক্ষমতা, শুক্রাচার্যা।

নিষ্ঠা — ক্লেচ্ছ জাতি বিং।

इँढे—शस्त्र। (०) जाक्ता।

बहेर् —[हर] गरशा विर, [b] ।

कारेंहें —[इर] हिला।

প্রারট —বর্ষাকাল। जार्वि -- देश कका।

ক্ইল্ট — ইং লেপ, কম্বল। कारें -[तर रेजनामित भिर्फे, (हर) हिल, भूड़ी

नभीषे - क्यारीन वाकि, छोटका।

कुशीं - छेमत, वन, जन, कार्ड । চিপিট — চিবিটা চিড়া, চেপ্টা, আয়ত নামিক।

কিরীট — মুক্ট, শিরোভূষণ। তিরিট - চূড়া, মুকুট, কিরীট, আকের গাঁট।

चिती है - हुक बिर, लाइज्य, किती है, ताज्यकू है।

আরুষ্ট — যাহাকে আকর্ষ। করা হইরাছে, বশীকৃত। নিরুষ্ট — অপকৃষ্ঠ, জঘন্য, নীচ। প্রকৃষ্ঠ — প্রশন্ত, শ্রেষ্ঠ, উংকৃষ্ট।

বিক্ষ — মাক্ষ্ঠ, উদ্ভুত, কবিত।
উংক্ষ — শ্রেষ্ঠ, প্রধান, উত্তম।
নিষ্কৃষ্ঠ — নিশ্চিত, যথার্থ, ক্ষ্রিত, মদ্দিতি, সারাধ্য।

নিষ্কৃষ্ট —নিশ্চিত, যথার্থ, ক্ষ্রিত, মন্দ্রিত, সারাহশ।

গ্রুষ্ট —মন্দ্রিত, ঘ্যা।

নিস্ষ্ট —দত্ত, প্রেরিত, রক্ষিত, স্মস্ত।

বিস্থিট —প্রেরিত, নিক্ষিপ্ত, দত্ত, বিজ্ঞিত।

উৎস্*ষ্ট —*ভাক্ত, বিস্*ষ্ঠ*, দত্ত, নিছিত। উচ্ছিষ্ঠ *—*এঁটো, ভাক্ত।

সংস্থ - মিলিত, সম্বন্ধ, সংগার বিশিষ্ট।

প্রতীষ্ট —প্রিগৃহীত, অঙ্গীরুত,স্বীরুত।
আদিষ্ট — সাজ্ঞপ্ত, নিযুক্ত, সাদেশ প্রাপ্ত, আদি

আদিই — আজ্ঞ ও, নিযুক্ত, আদেশ প্রাপ্ত, আদেশ।
নিদিষ্ট — আদিই, উপদিষ্ট, কথিত।

প্রদিষ্ট —উপদিষ্ট, নিদ্মিষ্ট, দত। উদিষ্ট —গভিপ্রেত, সন্ধান করা, উপদিষ্ট, কথিত।

বিষিষ্ঠ —বিষেষ প্রাপ্ত, মাহাকে বিষেম করা যায়।
অনুষ্ঠ —ভাগা, আক্রিফিক বিপদ প্রকাশ্যর প্রাপ্ত

অনুষ্ঠ —ভাগ্য, আকস্মিক বিপদ, ধর্দ্ধার্ধর্ম, পাপস্থান। শন্দিষ্ট —সাদেশ, বার্ভা, কথিত। নিদিপ্ত-নিশ্চিত, নিনীত, উল্লিখিত, কথিত। অপ্লষ্ট —লজ্জাশীল, বিনীত, নিরহয়ার।

অনিষ্ট -পাপ, অপকার, তুঃখ, অনভিল্ষিত অশ্বিষ্ট —শাহার অখেষণ করা যায়, আকাঙ্কিত

অপৃষ্ট —অজিজাসিত, অক্থিত। শিষ্ঠ — সরল রক্ষের রস, টার্পিন।

मुलीहे - श्री थ छ, ठम्पन, गरर्शत थिया !

নিজ্ঞি — চুণিত,মৰ্জিত,মৃষ্ট,আহত,ডাড়িত আবিষ্ট —ভূতাদি দ্বারা অভিভূত, নিবিষ্ট, মনোযোগী।

निविष्ठे-निद्यं युक, श्रीविष्ठे, लक्क, भटनार्याशी। প্রবিষ্ট-- যাহ। প্রবেশ করিয়াছে। সংবিষ্ট-সুপ্ত, নিজিত, শয়িত, নিবিষ্ট।

নির্কিষ্ট --প্রাপ্ত লব্ধ, অনুভূত, উপভূক, পুষ্ট, হিত निर्का मुछे--निः देशदम त्रम्छ ।

অভীষ্ট --বাঞ্ভি,অভিল্ষিত,প্রির,দ্য়িত,ইষ্ট্লভি। প্রায়ষ্ট --পরিষ্ত,নিধে তি, গার্জিত,উজ্জল,নিরস্ত

উন্মৃষ্ট --মার্জিভ,বিমলিকৃত। সম্মুট-মার্জিত, পরিক্ত, নির্মানীকৃত, চুয়ান। অরিষট — ভুতিকাখর,ভাগ্য, মৃত্যু চিহ্ন, কাক, মদ্য,র শুন অক্লিষট-অক্লান্ত, অপ্রান্ত, অতি প্রামী।

বিলিষ্ট—অসংযুক্ত, বিচ্ছিল, শিথিল, প্রকাশিত দ স্লান্ট — নিবিড়, সংযোগ বিশিষ্ট, দৃঢ় বদ্ধ।

সুর দিট্ - সমুর, দানব, দিভিজ, রাহা। . वल विषे - रेख, वागव। भूगिषिषे - शिक्ष, विश् । णहिष्ठि - विकृ, हेन्स, शंक्रफ, भग्नत, नकूल I

जातिमारे -(हैर) वशन। প্রহিবিট -(ইং) নিবারণ করা ! गधनिष्ठे - मधुकत, जमत ।

जिञ्चालिहे - कुकूत, गांतरंगस। বেডশীট -(ইং) বিছানার চাদর।

माजाकिली -(हर) न क कर्मी!

ज्यक्री है

ব্ৰণদিট —বামনহাটী গাছ। कछिष्ठे -इस्, भक्।

ভঙ্গরিট यक्षती है

श्रुक्श लिए

नाभवीषे - लम्भिष्, धूर्व।

- थक्षन शाशी।

নাগরীট -লম্পুট, বিট, নাগর, নগর জাত — ভূঙ্গরীট শিবার্চর।

— इंक, जगत, गधूकत ।

इंडे-ज्ड 856 দীপ্রিউ -দীপ্রিখাজাত কালিমা, কাজল। তিলকিউ -তিলের খৈল, তিলের কাইট। বৈলকিউ —তেলের কাইট, খৈল। লোহকিউ —লোহমল, লোহার মরিচা। প্রতিকৃষ্ট -নিকৃষ্ট, ছুইবার কৃষ্ট। উপ্তরুষ্ট - বিচতলা, বীজ বপনের পর ক্রিত ভূমি। हेस्तू कुष्ठे - विगाकर्षाव (ग मकल प्रवा छे १ शह इस । गित्रकुष्ठ - निक्रेवर्जी, मगीलय, मित्रिक । অপর্ষ্ট —অধ্য, অপ্নীত, নীচ, খারাপ।

অপ্রকৃষ্ট — নীচ, অধম, কাক। বিপ্রাকৃষ্ট — দূরস্থ, দূরবর্তী, অন্তর। অবকুষ্ট —তাড়িত, বহিষ্ঠত, অধ্য, হীনজাতীয়। ষাত্যৎরুষ্ট — অতি উত্তম, চমৎকার। অভিত্ত -দত, পরিভাক্ত, নিযুক্ত।

প্রতিস্থ -প্রেরিভ, প্রেরিভ, দত্ত, নিরারুভ। উপসৃষ্ট —আক্রান্ত, ব্যাপ্ত, রাহুগ্রন্ত, ভূতে পাওয়া অসংসৃষ্ট - অগিশ্রীরুত, স্বতন্ত্র।

মধূ দ্বিষ্ট -- মধূখ, গোম। অনুচ্ছিষ্ট —পবিত্র, বাহা উচ্ছিষ্ট হয় নাই। ताङ्किष्ठ - तशुन।

সমুৎ সৃষ্ঠ - সমাক্ ভাজ। রাহুৎস্প - রশুন।

উপস্থৃষ্ঠ — সাচান্ত, কতাচমন, স্নাত, স্পৃষ্ঠ, সংস্কৃষ্ট।
ভূতাবিষ্ঠ — পিশাচগ্রন্থ, ভূতাক্রান্ত।
ভানাবিষ্ঠ — জমনোযোগী।

অনাবিপ্ত — অমনোযোগা।

সন্নিবিপ্ত — গৃহীতাসন,নিকটন্ত সংক্রান্ত, উপস্থিত।

উপবিপ্ত — যে বসিয়াছে, ক্রতোপবেশন, আসীন।

শিপিৰিপ্ত — বিষ্ণু,শিব,তুশ্চর্ম,মেচু,টাক,কুষ্ঠরোগী।

সমাবিষ্ট —মনোযোগী, একাগ্রচিত। দেবাভীষ্ট —পক্তির, দেবদত !

ভবাভীপ্ত — গুণ্গুল। ভাবমৃপ্ত — ভুপ্ত, দুৰ্দ্দিত। ভাভিমৃপ্ত — মিলিত, মস্তুদ্ধ।

```
গরাম্প্র —বিচারিত, বিবেচিত।
পরিম্প্র —বিভারিত, বিবেচিত।
পরিম্প্র —বিভারিত, ঘর্ষিত, আলিঙ্গিত।
পরিম্প্র —পরিক্ষত, অতি ক্লিপ্র, বিরক্ত।
অসংশ্লিপ্র —অসংযুক্ত, অমিশ্র।
প্রতিশিপ্র —থেরিত, নিরাক্ষত, প্রত্যাখ্যাত।
অর্থিপ্র —আদিপ্র, ধর্মশাস্ত্রান্থ্যাদত,প্রায়সম্পূর্ণ।
অবশিপ্র —পরিশিপ্র, বাকি।
পরিশিপ্র —পরিশেষ যুক্ত, পর্যাবিশ্বত, এন্থাবশিপ্রাংশ
ইউ—অন্ত'। [৫] পঞ্চাশ্রন।
```

क्वार्टेनाहें -(हर) शक, इहे मखाइ।

সিডনাইট —(ইং) অন্ধরাতি। ছাটেনাইট —(ইং) উপগ্রহ।

. बहलां विषे - त्कां किल।

দনুজ্বিট —দেবত।।

नमू हिषिते ... चेल, शूत्रमत ।

বাতাপিদিট্ — অগন্তা মুনি।

कछककी - भूँ या लाका।

णगिक्छे - मृतवर्धी।

स्रतिषिष्ठे — अस्त, देमछा, मानव। तमगालिष् — तमगा लहनकाती, कुकृत।

অ্মরকীট —কাঁচ পোকা, ক্মিরে পোকা।

থাবালকীট - সমুদ্র সম্ভূত লোহিতবর্ণ কীট বিং।

কুসংস্কারাবিষ্ট —যাহার বুদ্ধি কুসংস্কারে অভিভূত। জীবনাবশিষ্ঠ - মৃত কল্প, মৃত প্রায় ৷

इंग्रे-ज्ञा (१) मखाकत।

অস্থি-চর্দ্মাবশিষ্ট-অতিশয় কৃশ। छढे—जसा (२) घाकता कूषे —(शा) वक श्रान्कृष्टिल, कूष्टेल,(हाल)कृष्टिक।

কুট্ —(ধা) অপ্রাসর হওয়া। গুট্ —(ধা) বেষ্টন-গুটি, গুটিকা, গুটিপোকা। ঘুট্ -(ধা) প্রতিহনন, পরিরক্ষণ, ঘোটন, ঘোটক।

कृषे —(श) ट्लनन-टार्चे, टार्चिडा ছুট্ —(ধা) ছেদনকরা-ছোটিকা, ছোটন, ছুটিত। इते -(हर) नालिश।

জুট্ —(ইং) পাটগাছ, কোষ্টা। তুট্ —(ধা) কলহ ক্ল-ভোটক, তুটিত। ক্রট্ —(ধা) ছেদন ক্রটি, ক্রটিভ, ব্রোটিভ।

পুট্ —(ধা) সংগর্গ-পুট,পুটিভ,পুটক,করপুট,সংপুট।

ফুট --(ইং) পদ, পা, কবিতার চরণ, লাথিমারা। क्ट्रे -(इर) कल, उदलिख, मञ्चान मञ्जि ।

कृष्ठे -(धा) जिमन, विकाश-कृष्टेन, बारकाष्टेन। মুট -(ধা) মৰ্দন-মুক্তন, চূর্ণ-মুটন,মোটন, মুটিতা।

कृष्ट् -(इर) मृल, शिक्छ, आपि कातन। हूरे -(भा) मीखि भा-लार्जन, कोर्या, इत्रग-नुक्तन।

कू रे -(हेर) वाँमा। छ्छे -(इर) (शहक ।

क्र रे (४।) चूर्यन कता।

লুণ্ট্ --(ধা) লুঠিয়া লওয়া, লুণ্ট্ভি, হরণ রু।

উট —(प्तर) नारशार्थ, उद्वे।

কুট — দুর্গ,গড়,প্রস্তর খণ্ড করিবার যন্ত্র বিং, পর্বত।

• কুট — পর্বতের শৃঙ্গ, কপট, সমূহ, ছর্কোধ, নিশ্চল,

শস্যরাশি, স্তুপ, দস্ত, কলস, লৌহ মুদ্গর,

লাঙ্গল বিং, সায়া, কদলী, মিথ্যা, কপ্লিত, পুরদার, জাল, রাশি, যন্ত্র।

भूडे -(यार) मिल, लेका।

भूँ है -((पर) वज्रशास्त्र, त्रा वक्षनार्थ त्रांक विर ।

ষুট -গুল্ফ, গোড়ালি।

क्रि - अ. है।, शिटवत क है।, वक्षन, ममूर ।

পুট - জাবরণ, খাপ, অঞ্জলি, কৌটা,মুচি, মধ্য, পুষ্ণা-टोका, यूर्या, यूराल,, अटइत श्रत ।

ব্যুষ্ট — দগ্ধ,ঝল্মান,পর্যু মিত,ঝানি,প্রাতঃকাল, স্তৃতি।

উট—গন্ত। (৩) ব্যক্ষর।

মুষ্ট —শ্রপস্থত, চোরিত, বঞ্চিত। ঘুষ্টু —শক্ট, গাড়ী।

জাউট্ —(ইং) বাহিরে। গাউট্ —(ইং) ব্লাত রোগু।

व्यक्षे - मक्ष, याल्यान ।

ত্রিকুট —কেরল দেশীয় পর্কত বিং, গৈন্ধব লবণ। गद्र छ - नागिका, नाक।

ভাকট —ভেটকী মাছ, পর্মত বিং।

[3] ভাক্ট -खकुँ - क्कि , क्कि ।

मक्षे -[मूक्षे] कितीष्ठ, मूक्षे, शिरतां इया। •কুকুট —যে ভূমি আঁচড়ায়, কুকড়া।

অহুট —উদ্যাটন, চাবী, কুঞ্চিক।। কুট্কুট —(ছেং) চুলকান, কগুয়ন। উৎক্ট —স্টান হইয়া শোয়া, চিত হইয়া শোয়

উংকট — আতপত্র, ছাতি। उर्क हे - काह्नाका है।। বকু ট্ট - অর্গল, খিল, পিন আৰ্পিন।

निकृषे - क्लाष्टे, (क्क. असः शूत, अनरताभ, छेलरम । निथूँ हे -निट्मांस, निक्वक ।

জাটুট — সখণ্ড, সভগ, সুম্পূর্ণ। ...

উট--অন্ত। [৫০২] ব্যক্ষর। निष्ठेषे --निर्द्धाय, मञ्जूर्ग। हिथ्रे - हिङ्ग, ८६%।, आंश्रु नांगिक। बिशूरे - उरे, जीत, भत, त्थमाति कलारे। —ক্ষ্টজীবী, অধির, সন্ধিয়ান, উন্তানত। সম্পূট —কোটা, ঠোঙা, পেটরা প্রভৃতি, কুরুবক। অক্ট — ল্বাক্ত, অদৃষ্ট, অবিক্সিত, অবাক্ বচন। সংক্ট —প্রক্টিত, বিক্ষিত, উন্মীলিত। বাবৃট —বহিত্র, নৌক।। নির্দ্দ্র — সুর্যা, পনম্পতি, কর' শৃত্য হাট, পুপশ্না হর্দ্য - সূর্য্য, কছপ। তরট - পাছের গেঁড়ো, পাছের মূল। বরুট —স্লেচ্ছঙ্গাতি বিং।

বৈয়ুষ্ট —প্রাতঃকালীন। मूक्ष्षे - तन मूका, मूगानि। জাকুষ্ট —তিরস্কৃত, নিদিত,অভিশপ্ত, অভিশাপ যুক্ত বিকুষ্ট — নির্দয়, নিষ্ঠুর, কঠিন, আহুত, আকোশ কারী।

বিঘুষ্ট —ঘোষিত, প্রচারিত। উষাষ্ট —শব্দিত।

ক্রণ্ট — ঝিণ্টা রক্ষ, কাঠের পুতুল।

প্রভূষ্ট — লাগক, অতাত লামুরক।

नियुष्ठे -निनाम, श्र्वान, निर्धाय, शक्कि ।

সন্তণ্ট - সন্তোম যুক্ত, তৃপ্প, আহলাদিত।

कारकर्षे -(हर) कार्राम। शक्करुषे —शब्ब, गरताङ।

शर्मकरे -- माँ फि्स, मा फि्म i जारताक्रे - (हर) जाताक्रे । गताकरे - भक्क, भन्न।

শিরোরুট্ —কেশ, মাথারচুল। আাকাউণ্ট —(ইং) হিসাব, সম্ভ্রম, বিবরণ।

, ডিকাউন্ট্ —(ইং) বাটা। व्यहेकू छे - श्राट लिका, कू छे श्रास, श्वाका।

চিত্রকুট - রামগিরি, চিত্রকোট। চন্দ্রকৃট —কামরূপস্থ পর্বতভেদ।

ইন্দুকুট স্কুলন্ত প্ৰভৃতি প্পৰ্কতান্তৰ্গত প্ৰস্তুত বিং। विकाक् हे - अश्लाम्नि। মণিকুট -- পর্মত বিং।

আসকুট — যাহারা আদের অধিবাদী, চতুর্থ বর্ণ। হিমকুট ' —শিশির ঋতু, শীতকাল।

হেমক্ট

—হিমানয়ের উত্তর স্থিত পর্বত বিং।

डेंहे−गछ। [७०४] — গ্রিকুট পর্বত। ত্রিমুক্ ট —স্বনামখ্যাত পর্কত বিং। আমকুট —তামাক, ধুমপানযোগ্য পাত্র বিং। তাষকৃট —বল্মীক, উয়ের ঢিপি¹ বল্মীকুট আরকুট —পিন্তল ধাতু, পীতলভিরণ ! —ভাবর বিষ বিং,গরল, মৃত্যু রাশি গরল। কালক্ট — মহাভারতীয় দূরহ শ্লোক সমূহ। वागक्षे —[जारमक्षे] कक्ष, शाँठ व व छ। জংশকূট —কাসরূপস্থ গ্রাশিরস্থিত পর্বত বিং। ভঙ্গাকুট —বাদ্যের তাল ভেদ। চাচপুট — ট্রম্ব পাকার্থ হস্ত পরিমিত গর্ত্ত I · গ্ৰহপুট —উদাত, লজা বিহীন। কার্যাপুট —বস্তি দেশ, তলপেট, মূত্রাধার। মূত্রপুট — তর্মা নির্দ্ধিত পাত্র বিং, কুঁপা। চৰ্মপুট —বদ্ধাঞ্জলি, যোড়হাত। করপুট পচৎপুট — সূর্য্য মণি রক্ষ। कलभूषे — नवनी छ। ত্বত্ব কিট —শ্বতন্ত্র শিষ্য, কৈরচারী ! वृक्तुक्ति —नास्टिक, अनिश्वत्वामी। জলরুট — জলপদ্ম, জলজাত। নখক্ট —নাপিত। -काठेटिका वा কাষ্ঠক্উ

किल्युष्ठ --काक, वांग्रंग । উট-অন্ত। (৫) পঞ্চাম্বর।

জীমৃতকৃট -পর্কতের নিকটবর্তী ক্ষুদ্র পাহাড়।

প্রেক্ষণকুট -- চক্ষুর্গোলক, নেবা রোগ। -অগ্নিকুকুট —অগ্নিযুক্ত তৃণ, ছলন্ত সুড়া। অভিন্নপুট - সধুকপুপ্প, বাল পল্লব, পদ্ম। पर्पू त्रशूषे — त्वनूम्भ, नत्नत शास्त्र शा শির্সিরুট — মূর্দ্ধজ, কেশ, মাথার চুল। পরান্তঃপুট - অন্ত শরীরে নিজ পুষ্টকারী-কৃমি। উট—गछ। (७) य**ড्** मत्रा

খাসাদক্রুট -কপোত, গায়রা, পারাবত। এট-অন্ত। (२) দ্ব্যক্ষর। খেট্ —[ধা] ভক্ষণ-খেট, খেটন, খেটিত, খেটক।

ি ৫০৬ ী দ্বাক্ষর कार्ड-शहरा छाएं --हिर वफ, द्रहर। ডেট —[ইং] খেজর, কর্জ, তারিখ, ঋণ। त्नरे - [हर] जाल, मना। भिष्ठ - [हर] गतकात, मन्त्री, गाथी। রেট্ —[ইং] দর, (দেং) অলঙ্কার বিং। লোট —[ইং] বিলম্বে, দেরিতে, বাধা, প্রতিবন্ধক। एक्क ए —[हेर] वामन I त्तल हैं - दिशे त्रांभत तमा। टिडे -[४।] टिडें।, टिडेंग, टिडेंग, टिडेंग, नहें ८७४ - [३९] भिन्नु क ।

(वह --[भा] (वहन-विषष्ठे, (हेः)गरका छम्। বেষ্ট -- हिः वकः इल। রেষ্ট — ইং] প্রতক্রা, অবশিষ্ঠ, বিশ্রাম লওয়া। রেণ্ট — ইং] আরজি, (পেণ্ট)-রং। (थक्ष -- [इर] इति।

ट्याँ — ङक्ष्व, स्थािष श्रह, ज्यम, (घाष्ठिक, क्क्, क्लक, ঢাল, চাসা, গাঁ, পাড়া গাঁ, ত্থ, মুগয়া।
েডট —যাহাকে প্রেরণ করা যায়। নেংট —[দেং] উলঙ্গ, বিবস্তা।

েট -- পেটরা, ঝাঁপি, উদর, জঠর, গর্ভ। ভেট — [দেং] উপহার, নজর। ट्रिंग — भा शौड़न कता, दक्षभ दम अहा, दिन्श जाथः, तखा

```
(इंडे - [मिर] अधः, नस ।
গেণ্ট -- মাহুত, হস্তিপক।
त्वष्ठे - त्वष्ठेन, त्वज़ा, निर्वाग, जाठी, छै। निन ।
            এট-হান্ত। (৩) ত্রাক্ষর।
इत्रहे - [हर] এখন পर्वास्त ।
शक्के - [हर] (ज्य ।
वारिक हे--[हर] कश्ल।
गाहरक छै - [हर] वन्छूक।
गार्क छ —[हर] वाजात, शहे।
शांदहर् —[हर] कुड़ानी।
भारनं ( इर ] बहा
काटलिं -[हर] शालिका।
करमहे - [हर] धूमरक छू।
हैन्द्रमञ्चे - [हर] क फिछ, शब्स ।
থেজেণ্ট ্—[ইং] উপহার দেওয়া, উপস্থিত হওয়
है एक ( - [हर] हांज, शर्ड़ा।
करमन् —[हर] जिका, नाथा।
गारमणे -[हर] मूड्र्ड, जातश्रक, रल
(सर्वे —[देश] कागत, गावा।
```

गएछहे -[हैर] गलब्झ, शिव्हे।

আখেট —মুগরা, পশু পক্ষী শিকার, তীতি, ত্রান।

विश्वत्रे -- [हर] विकृष्म ।

```
[ ৫০৮ ] চ্চুরকর
वर्षे-ज्या
চিন্দেট -- চিন্দ ড়িমাছ।
शिएक -- त्वयन, शिर्षे ।
চপেট —চাপড়, চড়।
সক্ষেট —নাট্যোজিতে-আক্ষালন, দ্বন্দু যুদ্ধ।
गर्तक्र -- युम्न, गर्धाम, त्रव, व्यतामत कता, यथ कता
क्षारवर्षे - नगा विः, यव ।
निरति --[(मर) विस्मृता, मृष, मङ, कठिन।
খশেট —খলিশ মাছ।
कारकष्ठे -- निश्रह्रक ।
 र्योर्गष्ठ - नीमा, भीमक।
 जारक रें —िनर्रकें, रहें मृना।
 गटाडे - डिल्गानी, टाडेग्ड, वाव, बाखा
 নিশ্চেষ্ট—অলম, চেষ্টাবজ্জিত, গতিশক্তি রহিত।
 যথেষ্ট - যথাভিল্ষিত, প্রচুর, ইচ্ছানুযায়ী।
```

সর্পেষ্ট — এইও, চন্দ্রন, সাপের প্রিয়।

कीरत्रे — जास दुक, जारशाहेशाइ।

সুরেপ্ত -বাণ গাছ, শালগাছ, পুরাগ রক্ষ।

দেবেষ্ট —দেব বাঞ্চিত, দেবতাদিগের অভীপ্ত,গুণ্গুল। প্রাবেষ্ট —বাহু, হস্তী পৃষ্ঠের আন্তরণ, হস্কিদন্তুসাংস।

এট—অন্ত। (৪) চতুরকর।

ত্রীবেষ্ঠ — সরলর্ক্ষ রস, টার্পিন।

भातात्करे - दिशे हिंस।

[6.5] इंगिए हैं। नकलकता। স্যাজিছেট —'ই, বিচারপতি।" गागरन है - [हर] हुत्रक। इत्राचि - हिर जिमकुल। एक्ट के --[हर] गश्राम । (बिहाल है - हिर] कहन। गातरभन्छे — दिशे मर्थ। जकरमणे - [हरे तांस । हि उदमन्हें -[इर] िकिरमा।

বায়লেট --বর্ণ বিং, ঈষৎলালের আভাযুক্ত গাঢ়নীল नंडेरहरे -- म्लमशैन, कए, म्लमन मृन्य, निस्क ।

— গীদক, নিহ, পলাই, রশুগ, গাজোর।

रेगक एउड़े -- आर्फ्र क, आमा।

তপদেপ্ত - ভাষ, ভাষা।

यवदन्छ

অর্ণামেন্ট্ — [ইং] অলঙ্কার।

ওয়ারেণ্ট্ —[ইং] গ্রেপ্তারি পরওয়ানা এক্ছেলেस - [हर] अष्रदहरी। तित्कारमञ्च — [हर] जनूरताथकता। हेली (तर्षे - हिर्] सूम, गण्नव। খন্তবেট --খন্তন পাখী। একপেট --[দেং] উদরপূর্ণ, একোদর। কর্কবেট — অর্কচন্দ্র, গলহন্ত, গলাটিপি।

```
জট —ছাস্ত। (65° ]
भृकरवष्टे —करभक्त, रक्षत्त, भृकरतत थियप्रवा
প্রবেষ্ট —ভাড়ঙ্ক, ভূষণ বিং।
त्रगादवष्ठे — श्रीवाम, धूना।
भिरंतारवष्टे -- शाग्डी, उक्षीय।
भानरवर्षे -[मानरवर्षे]मर्ब्बतम, धूना ।
           वरे—बस्र । [a] शक्शकता
शमधारनष्ट् —[हर] माफिंग।
बााषकूरहेन्ट् —[हर] धाष्ट्रिना, रेमगुरमत अधाक विर
'फिर्फनएफलें - हिरो जानामी।
এक किरमन्हे — [हर] मल, विष्ठी।
ष्णारतक्षरमञ् – [हर] वरमावस्र ।
जारमण्टरमण्ट्—[हर] मलम।
জ্যাবেটদেণ্ট্—[ইং] জপরাধের সাহায্যকারী।
शानिभारमणे — हिरो पछ।
 গঞ্জরাখেট - মৎস্থধারণ যন্ত্র, পলোপভূতি।
 উদরাবেষ্ট —উদরেজাত দীর্ঘাকার রজ্জুবং কুগি।
 শাল্মলীবেষ্ট —শিমুলগাছের আটা।
             এট-অন্ত। (ড) ষড়কর।
 जामनिष्ड्रालें -[हेर] गर्कछ ।
 অমনিপোটেণ্ট্—[ইং] সর্ব্ধ শক্তিমান।
 रमल वित्यक्त - [हर] इसी।
 অ্যাছাইনমেণ্ট ্—[ইং] বরাতি, প্রদান, নিয়োজন।
```

```
[ 055 ]
इस्थीकनरमणे - [देश] करम ।
लहैन ७ रत्न हैं। कामत, कि ।
আয়রণচেষ্ঠ —[ইং] লোহার নিন্ধুক।
অনুরূপচেষ্ট —বন্ধুভাবে কার্যাকরণোৎসুকা
          ab—बस्र। (१) मश्राकत।
আনকরচু নেট্ —[ইং] অভাগা, লক্ষ্মীছাড়া।
किरमल्विलिरकले-(इर) इकिनी।
           एके—जला (৮)° जहांकता
ডিছয়ৢৢৢৢাপয়েড়ৢঢ়য়ড়ৢ৾—[ইং] নিরাশা ।.
           এট—अस्र । (৯) नवांकत ।
এডভারটাইজমেণ্ট --[ইং] বিজ্ঞাপন, সমাচার গ
क्रािशिष्टेन-शािनिमरमण्डे-[३] शागम्छ।
           ঐট─অसा (२) घाकत।
रेनड्रे-श्रिवी, कंगर, जूनन।
           ७७— गरु। (२) घाकत।
```

কোট্ —[ইং] কোট, জামা বিং, মাখা।
খোট্ —[ধা] নেংচিয়া গমন-খোটন।
গোট্ —[ইং] ছাগল, অজা, ছাগ, অজ।
ছোট্ —ক্ষুদ্র রশি, গরুর মুখ বৃদ্ধ রজ্জু।

(थारे -[हर] भना वा कर्श्टममा

कार्हे - [इर] जामानज, विठातानम, जान्निमा, त्थामामम वाल्हे - [इर] ছिট्किनी, भत्न, वज्जुः लाहान वार्जा।

```
७० - जाउ। [ ०५२ ]
ঘোষ্ঠ —[ইং] ভূত, আত্ম।
পোষ্ট — ইং) शूँ जी, शम, স্থান, ডাক, আডডা।
(ताष्ट्रे — [इँ१] कानान, कलगान।
लाहे - या] नश्कृ कता-त्लाहेन, त्लाहे ।
कां छ - गड़, कला, पूर्ग, को छिला।
ঘোট —অশ্ব, ঘোড়া, প্রতিহন্তা।
চোট —(দেং) কৃত, আঘাত, ঠোকর।
ट्वां छे — किंग्रिं, ज्ञां अप ।
ঠেটি —(দেং) চ্ঞু, ওষ্ঠ ।
পোট - নংশ্লেষ, স্পর্শ, মিলন, নীচ, অগ্র, বেশাভূমি।
 त्कां हे - कांडा, कूडेन, कांडा।
 বোঁট —(দেং) ব্রস্ক, ভাঁটা, চুচুক।
মোট —(দেং) মন্তক দারা বহনীয় বস্ত,ভার, একুন।
 রোট —হিংঅক, মারাত্মক।
কোট — তুর্গ, গড়, রাজধানী বিং।
 বোল্ট —রন্ত, ডাটা, বোঁটা, গুঁড়ি।
 लान्ने — [लान्ने] मुर्थं, एवना, लोहमन, मनिहा
          ওট—গন্ত। (৩) ভ্রাক্র।
 অকোট —গুবাক, সুপারি গাছ।
```

বকোট —বক, ক্রেপি ।
শাকোট —শেওড়া গাছ।
অক্টোট —গাঁতকাড় গাছ।

ভাটোট —(দেং) অনার্ন্তঃ, বাহা চবা হয় নাহ, নাত্ত ভাঁচোট —(দেং) ঠোকর, পদাঙ্গুলিতে আঘাত। কন্দোট —শ্বেত পদ্ম, স্থাদি, নীল পদ্ম।

আক্ষোট — মাঘাত, তানঠোঁকা, আকন্দ গাছ।
ছঃক্ষোট —শস্ত্র বিং।
বিক্ষোট —ব্রণ, ফোড়া।

বিক্ষোট — এণ, ফোড়া।
সংক্ষোট — যুদ্ধ, সংগ্রাম, রণ, অনাদর করা, বধ করা
ওট — অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
অলমোপ্ত — হিং] প্রায়, নিকট, যৎকিঞ্চিৎ, নূন।

মুক্তাক্ষোট — শুক্তি, ঝিনুক।
পাদক্ষোট — রোগ বিং, চরণের নিম্নদেশে ক্ষোটক।
পুগরোট — হিন্তাল রক্ষ।

করারোট — অঙ্গুরীয়। ওট—অন্ত। (৫) পঞ্চাক্ষর।

নীহারক্ষোট- বরফের বড় চাঙ্গড়। ওট-অন্ত। (৬) বড়ক্ষর।

প্রতি—অন্ত । (৬) বড়ক্ষর ।

বিলম্ফনোট — ইং] বরাত চিঠা।

অটা-অন্ত। [৫১৪] ७६- शहा (b) शहाकता কণ্টেম্পট্-অফ্রদ-কোর্ট — ইং আদালত অবজ্ঞ।। ইট—অন্ত। (২) ঘাকর। কৌট-কুটজ রক্ষ, স্বাধীন, স্বতন্ত্র। উঠ্ঠ —উঠ্ঠ সংক্রান্ত। অটা--অন্ত। (২) দ্বাক্ষর। कछ। -[प्तर] कृष्ण, श्रीतवर्ग, कछ। गिशा तर। घषे। — अक्टेनमा, गङ्ग, नगादत्राह, ममुह। छीं - बारलाक, र्यांडा, गमृद्रं, गतलरतथा। करे। '-नशरकभ, करे, निश्हामित घार एत वाँ है, हक्ष्य क है। - पछ, भूई, कि उत, शर्रेड।। भहे। - किं।, मिश्शिमित किंगत विर, किं उकिम। থটা —পর্যায়, খাট। ভট। —वामाञ्चला वृक्ति। अहे। - लर्ग क, शांहे। लते। - नाठांकत्रका, खागा ठठकशकी। घछ। — घरिक। काँगानि निर्झिष्ठ वानायञ्ज विर, शुष्ण विश অষ্টা —ব্ৰহ্মা, শিব, সৃষ্টিকৰ্ত্তা, পিতামহ, বিধাতা। यष्ट्री - यां गंकर्ली, यक्ष्मान, यां किक। . তষ্টা —বিহুকর্মা, সূত্রধর, ১২ সূর্য্যান্তর্গত সূর্য্য বিং। ত্বষ্টা — বিশ্বকর্মা, সূত্রধর, ছুভার, স্ব্যান্তর্গত স্ব্যা বিং थाहा - जिल्लास, श्रीमूक्डा।

```
1 ese 1
                                       চতুরক্র
 बहा - वा जिहाति गाती, कुलहे।।
 खरे। - त्य (मटथ, नर्भक, गांभी, विठातक।
 गर्ष्ट्री - विगांशक, गध्त ।
             ভট।—অন্ত। [৩] ত্র্যকর।
 वक्रों। - वक् वस्तु, वक्रे, दक्रवल।
 कठि। -((प्रः) गार्था, ठि कान, गर्कन।.
 উচ্চট। - य ताश नहे कत्त, छुछा, मूथा, छ- शामनक
 विकरे। - ताकशी विर।
 अङ्क है। - द्रक विः, ভূगानिकी, जागना।
পিপ্লটা —গুড়, শর্করা।
 বোগটা —(দেং) অবগুঠন, মুখাচ্ছাদন।
िमिं। ─(पर)गमर्गक्, शांक माँ । इति। दाना, अल्खाः
ক: ট। —যে গাভী কঠে ছিল্প দেয়।
 वात्रहै। --ताक दश्मी।
```

কুল্ট। — যে কুল হইতে গমন করে, অনতীন্ত্রী, জন্তী

অটা--অন্ত। (৪) চ্তুরক্র

জাউ, সট। -- (দেং) সন্থ্যা, গোট, মুক্তরিগিরি।

ञ्चक छ। — हुइ छी, कि छ का ती।

উলটা —(দেং) বিপরীত।

ভিন ম টা — দগ্ধ আন, পোড়া ভাত। ন অউ। — বল্লী, বীরুৎ, লতা।

রুজ্জট। — হুর্গা, অত্সী পুজ্প।

```
वाहै। वाह । ( १५७ )
मूथवरों - विवाशिम मन्न मगरा छ्लू छ्लू अवि।
टगार्थपरे :- : ग्राक्टलत शाह ।
উপদ্ৰপ্তা —উপদর্শক।
           আটা-অম। (২) দ্বাকর।
जािं। —(तिर) श्रीशृष हूर्न, शरम्त छ छ।, मशना ।
काषे। —(१४) ছिषिड, कर्डिड, कांग्रेग।
কাঁট। - কণ্টক, বাবলাদি গাছের স্থৃতি, কুদ শক্ত।
रान्य - शीवात शकासात्र, बांफ, तांखा।
काछ। — जू-गांगलकी।
कांगे -((पर) मन्त्रार्किनी, शंकता।
 डींहे। —(प्नर) कांछ, ब्रह्ट, मछ, दवाँहै।
 गांछ। —(त्नर) ह्रक विर ।
 পাটা —(দেং) পাটা, ভূমি সম্বন্ধীয়, ক্রয় পত্র, তক্তা
 काछ। -((मर) विमीर्ग, विमीर्ग इख्या।
 বাটা —(দেং) তামুলপাত, দরকমুরী।
 ভাট। —(দেং) নছাদির স্বাভাবিক স্রোভ।
```

ভाँछ। —(प्तर)वर्ज् न, वाँ पूल, नमग्रामित मामशिक कल डांग

লাট। —(দেং) তিক্ত ফল বিং।
ঠাটা —(দেং) উপহাস, তামাসা।
বাটা —(দেং) তামুল পাত্র, দর কস্থরী
সংপ্টা —(দেং) মিশ্রিত, একত্রিত।
কাপট্যা —(দেং) ফুপন, ন্যুয়কুণ্ঠ।

আটা-অন্ত । (৪) চতুরকর। कानकाछ। — [तंर] कर्न कर्खन, त्यकाया, त्यूँछ।।

त्यानाकां चे चित्र मुक कर्डन, अवाधा, (इँ हुछ।। ফেনচাটা —[দেং]>স্থানে ঠিক থাকেনা, নিভান্তানুগত একপাটা - (प्तर) গাত্রবস্ত্র বিং। कांग्शाहा - अली, कूछल, कर्णत निमारण।

जारे गाउँ। -[पर] माधातन कार्या, जैभी अतीरशत धमड़ा इंगे-ज्ञा (२) घाकता विषे। -[त्मर] बाहोल, हरें वरहे, छड़ विर, जतीर भन का शक

ছিটা -[দেং] বিল্কু, কণা, গুলি বিং, ছর্মা। পিটা —পূপ, আঘাতিতা

ভিটা —[ভিঁটা] [দেং] বাস্ত ভূমি।

गिष्ठे। --[(पर) मिक्ट तम, मधुत ।

शिका -[तर] मला, शाम, काइके ।

তিন্টা — ত্রিরৎ, তেউদ্দী 1.

विभूषे। —[तिर]जारभारखोलन यञ्ज विर त्माभा, जन्नश्रकः

पिष्ठा। - वास्तारम, मकरता जागकरम

নারাষ্টা — মাজনা রক্ষা।

ইটা—অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
ভাটিপিটা — যে আটজনের কাজ একা করে, শ্রমী।
শক্রস্থা — হরীতকী।
দেবস্থা — যাহা দেবতা কর্ত্ব সৃষ্ট হইরাছে, মদা
উটা—অন্ত। (২) দ্যাক্ষর।

কুটা — [দেব্ব ত্ব, পেষ্ড ।

মুটা — [খুঁটা] (দেং) কীলক, গোঁজ,কাষ্ঠথণ্ড, মাইপোন ঘুঁটা—[দেং] দক্ষ গবর। কাঁটা—[বাং] মিথ্যা, নকল। ঠুঁটা —(দেং) হস্তহীন, মুলা, ছিল রক্ষ। ফুটা —[দেং] ছিদ্ধ, ভগ্গ।

বুটা —[দেং] কন্ধাদার, নকাশী কার্য্য।

্নুটা —[মুষ্ট শব্দজ] হস্তালন্ধার, হড়ের মুট।

ভুটা —[দেং] জোনার, শেস্য বিং।

```
ত্তী — অস্ত। [ ৫১৯ ] দ্বান্ধর।

চ্নী — কুপ সরিহিত কুরতর জলাশর।

উটা—অস্ত। (৩) ত্রাক্ষর।

গোপুটা—বড় এলাচী।

মকটা — ন্যে জ্রীর কপাল অতিশয় উচ্চ, উঁচকপালী

উটা—অস্ত। (৪) চতুরক্ষর।

তিলকুটা—চিনি সংযুক্ত মিষট দ্রব্য বিং, কুটাতিল।

এটা—অস্ত। (২) দ্বাক্ষর।

চেটা — (দেং) খর্জুর বা তালপত্র নির্মিত আসন।

টেটা — (দেং) প্রস্কির বা তালপত্র নির্মিত আসন।

টেটা — (দেং) প্রস্কি, অবাধ্যা, নির্লজ্ঞ।

উটা — (দেং) গ্রস্কি, অবাধ্যা, নির্লজ্ঞ।

উটা — (দেং) গঠি; ধূর্ক্র।

নেটা — (দেং) থে বাম হন্তে সমস্ত কার্য্য করে, নেজা
```

পেঁটা —[দেং] পোঁটা, অভ্যন্তরস্থ পচা বস্তুন কেঁটা —[দেঃ] মালিস করা, ঘোঁটা, মন্তকরন্ধনী। বেটা —(দেং) পুত্র, তনয়, সন্তান, আত্মন্ধ, তবুজ

र्डिंग — [तम्र] वर्छ ल, वँ पूरेल।

নেষ্ঠা - খবিক, পুরোহিত ।

বেট্যা —(দেং) রশি, রজ্জু, পার্টের দড়ী। চেপ্টা —(দেং) চৌড়া, প্রশস্ত, চেটালা। ঘেঁষ্টা —[দেং] ঘেঁশড়ান, অঙ্গম্পার্শ।

(उष्टेश -(दंग्र) कांत्रिक व्यालात,कंप्र, ग्रि, गाइन, यञ्ज

७हे।—गष्ठ । (६३०) পেষ্ঠা. —[দেং] এক স্থানে থাকা, বেঁডু য়া । এটা- সন্ত। (৩) ত্রাক্ষর। नार्शिष्ठा —(८मर) विनामा, जुन विर । গজেষ্টা — ভূঁই কুমুড়া, ভূমি কুলাও। जारमङ्ग - जारमभ कर्छा, याजक। নিদেষ্টা .—আজ্ঞা দাতা। निटर्फर्री - एम निटर्फ्श कट्त, बा छो शक, वर्गमा कातक জনেষ্টা -হরিদ্রা, লাক্ষা, জাতি পুপা अरबष्टे . - अनुमन्तान काती। छारतह। -शरवश काती। কোড়েষ্টা - মুকা। এটা—অন্ত। (৪) চতুরকার। ভরণেটা —[দেং] উদর পূর্ণ, উত্তম জাহার अवटक्षे। -- गम ८० छ।। उलरम्ही - निका माजा। राश्राम्डी - कश्री, इल कात्रक, नारमारल्थ कारी

अष्ठे। — जास्र । (२) द्वाकत ।

কোটা —(দেং) অটালিকা, ইপ্টক্ময় গৃহ। খোটা —[খোঁটা (দেং) গোঁজ, কীলক। গোটা —(দেং) অথগু,আন্ত,জরির পাত।

ঘোটা —[দেং] গিপ্রিত করা, মাড়া।

हिंछ। -(दिन्र) এक श्रकात सून, जायां के।

ছি। [৫২১] একাকর।
ছোটা —[দেং] রজ্জু খণ্ড, দৌড়ান।
টোটা —[দেং] গুলি বারুদ সংযুক্ত পোঁটলা, বাতিখণ্ড
পোটা —স্ত্রী পুংলক্ষণা, যে স্ত্রীর দাড়ী আছে।
পোঁটা —(দেং) নাড়ী, আঁত, নাসিকার মল, সিক্নি।
ফোটা —(দেং) তিলক, টীকা, ফোটা।
বোটা —চেটী, দাসী।

বোটা — চেটা, দাসী।
বোটা — (দেং) ভাটা, রন্থ, চুচ্ক।
ভোটা — পুংবোধক-ভোটা কুকুর ইত্যাদি।
মোটা — (দেং) স্থল, মাংসল।

থোটা — (দেং) স্থুল, মাংগল।

লোটা — জল পাত্র বিং, ঘটি।
নোটা — (দেং) যটি, লাসী।
চোটা — (মাং) বাটপাড়, চোর।

খোন্টা —গুলা বিং, শেয়াকুল, গুলাক রক্ষ। কোষ্টা —শৃগাল, শিয়াল। পোষ্ঠা —প্রতিপালক, পোষণ কর্তা।

পোষ্টা —থাতিপালক, পোষণ কর্তা। ওটা—অন্ত। (৪) চতুরক্ষর। উপক্রোষ্টা —নিন্দুক, গর্দভ।

উট।—গন্ত। (২) দাকর।

কোট। — (দেং) কাঠাদি নির্দ্ধিত ক্ষুদ্র পাত্র, খটুরা।
মৌই। — মুষ্টি গ্রহরণ ক্রীড়া, খেলার কীলাকালি।

ি টি। (১) এক।ক্ষর।

हि —[हर] हा।

व्यक्ति-वद्ध। [622] টী—ই রক, গাছ। क्षर-[हर] मिष् ष्टि — [हा] (भा) वृष्टकता-र्ष्ट्रांड, निर्छवन। জটি—অন্ত। (२) দ্বাক্র। কটি —[কটী] কোমর, কাঁকাল, হস্থিপণ্ড। वि - विही [(मर] तानि, शतामर्भ, वानिका दान। घी -[तिर] पछ পরিমাণ কাল, জলপাত বিং, घड़ि। छति —[त्पर] खन, ठाउँ, थए, शख, शाह्रका विर। জটি - প্রক্ষরক, জটা সমূহ, পারুড় গাছ। জ্ঞা —পাকুড়গাছ, বটগাছ, সিংহ, জটাধারী,ব্রহ্মচারী छी - जीत. छि। भन - कोशिव। न्ति - नर्छकी, दिशा, मनः मिला, ताशिगी दिर। পটি — পিটা বস্ত্র বিং, কুঞ্জিকা রক্ষ, শ্রেণী। कार्षे - किंगे किर्किति। বটি — বিটা উপজিহ্বিকা, আঁলজিভ, অস্ত্র বিং। শটি —[শটী, সটি, সচী] সুগন্ধ মূল বিং, বন আদা। খ ি — সভার খাট। পা উ — ললাটভূষা, রক্ত, লোধু, অত্থের বক্ষঃ বন্ধন রক্ষ্ ভটি —ভর্তির প্রথিত, রামকথাশ্রয় মহাকব্য। ছ্টী —ফুদ্র ঘণ্টা, আলজিভ। कष्टि - वर्गामि शतिकाकृत्व, शांशत विर।

```
অটি — অন্ত।
                  [ 650 ]
यष्टि — गाठि, श्रः जामित मछ। -
ত্তি —[দেং] ঠেঁটামি, কঠিনতা।
বৃত্তি -- নাগিকার মল।
বাষ্টি —পৃথক, ভিন্ন২, অসন্ভাব।
मष्टी -गश्या विश (७०)
দং ষ্টা, - সর্প, বরাহ, দাতাল।
            অটি—অন্ত। (৩) ব্রাকর।
একটা —একমাত্র, একবস্তু।
প্রকটি — প্রকটী পাকুড়গাছ।
कक्थि - यड़ी, कठिनी।
আঞ্চী — অঙ্গুরীয়ক, আন্ধুলের আভরণ, অঙ্গুরী।
विष्णि — एका विष्णु शाक ।
.পুছুটি —অঙ্গুলি গোটন, আঙ্গল মটকান।
धुर्छि -िशव।
কুজ্বাটি - [কুজ্বাটীকুয়ানা, বাষ্প।
कूनजी - गनः शिला, धनगाक।
```

কর্ণটা -- কর্ণ ট্রারী, ভিক্তুক, ছিয়বস্ত্র পরিধানকারী।

कार्णण - अष्ठ, को, উমেদার, कर्ज्ञशार्थी।

অবটি ∸[অবটী] গর্ভ, কুপ, দেহহিত রক্ষু। দি !

জপটি —বস্ত্রাবরণ, পদ্দা। কপটি —প্রতারক, ধূর্ত্ত।

वर्क हि - कनाई तिर।

```
हिस्की -- कृषी, कांकूए।
করটা 🖚 হস্তী, ক্লকলাগী।
চারটী —ভূমি আমলকী,ভূঁই আমলা।
সরটি — ক্রকলাস, টিক্টিকী, বারু, গেঘ, মধুমক্ষিকা।
कुल्छी - गगः निल् ।
थीलिंग - पूर्विला, करा।, ज्ञानी, शिक्कक, त्रक्तू।
(मर्जे - शांशित I
চর্ভটি —আজ্লাদ, অকাতরেব্যয়ে ংগব, আত্মশ্লীম
নাট-ট্রী-(ইং) সুপারিগাছ।
পান-টী --(ইং) ভালগাছ।
অ্যাপণ্ট্ৰী--[ইং]আতাগাছ।
ত্রিয় । তির্বাধি । কেত্রপাপড়া।
সমষ্ঠি -- সম্ত্রাপ্তি, মাকুলা, সমন্ত্রা, সামগ্রা
षायष्टि -- वियष्टि, नायषि [ ५३]
            অট—িঅভ। (৪) চতুরকার।
চর্মচটা —বাহুড়, চাম্চিক।।
```

পটপটা — ভ্রমণ বিং,লতা বিং,বালকদিগেরখেলনা বিং

পঞ্বতী - অশ্বর্থ,বিষ্ক,বট,ধাত্রী, অশোক-দওকারণা।

আর্দ্রগিল-শত্রুনাশক, অথর্ব্ধ বেদোক্ত মত্র বিং।

পুরতটা —ক্ষুদ্র হাট, ছোটগ্রাম। গৃহতটি —গৃহের নম্মুখস্থান, রক।

মট ক্ষটি --দপারন্ত, দন্তপ্রকাশ।

বাট—সম্ভ। (৫২৫) প্রধানন।
ব্রক্তবর্গী — মসুরী, ইচ্ছাবসন্ত।
আরভর্গী—নাট্য জীড়া বিং।
বোরপ্রতী—বোরভূণে নির্দ্রিত মাছর, পান্তী।
প্রমি টি—সংখ্যা বিং, [৬৫]
একষ্য টি—সংখ্যা বিং, [৬৬]
আট্র টি—সংখ্যা বিং, [৬৮]
সাত্র টি—সংখ্যা বিং, [৬৮]
সাত্র টি—সংখ্যা বিং, [৬৭]
পিপুল্ট্বী—[ইং] অমুথ্যাছ।
নাগ্র প্রি—পুক্রিনীর মধ্যে প্রোত ক্রষ্ঠ, রইক্রাষ্ঠ।

পিপুলট্বী—[ইং] অন্থগাছ।
নাগ্য প্টি—-পুক্রিণীর গধ্যে প্রোত কণ্ঠ, রইকার্ঠ।
লতাব প্টি-নাজির্ঠা।
গধ্য প্টি-নাইকু, আক্, যপ্তি মধু।
ভার্য প্টি-ভার্বহন্দণ্ড, বাঁক।
এক্য প্টি-নালেক অধিক ষাইট, এক্ষ ডি [৬১]
চতুঃষ প্লি-নালেক। (৫) প্রধাক্র।

চতুঃৰ স্থি— চৌষ ডি, [৬ঃ]

আটি— গল্ড। (৫) পঞ্চাক্ষর।
পুসাশকটী — আকাশবাণী, দেবপ্রশা, পুসারু স্থি।
গ্রাম্যকর্ক টী--কুআ ও।
মন্থ্যতী — দ্ধিমন্থ্য পাত্র, ঘোল মঙ্যার হাঁড়ি।
ক্ষেত্রপপ্টী—ক্ষেত্রপাপড়া।
রক্তর্বালী — মুসুরী, ইচ্ছাব্যস্ত।

রক্তবর্ঞী --- মহুরী, ইচ্ছাব্যন্ত।
কোকনাট্টী-[ইং] নারিকেলগাছ।
নহজদংখ্লী -- পাঠিন মংগ্রে বোয়ার মাছ

```
আটি—অন্ত। [ ৫২৬ ] হ্যক্র।

আটি—অন্ত। (৬) মড্কর।

আটি—অন্ত। (২) মড্কর।

আটি—অন্ত। (২) মড্কর।

আটি—আন্ত। (২) মড্কর।

আটি—আনি প্রকী, (দেং) গুছু।

আটি—(দেং) ত্ণাদির কিরং প্রিমাণ মুটি।
কাটী—(দেং) কুদ্র রক্ষ শাখাদির খণ্ড।

আটি—অনদাগ্রহ, মড়ার খাট, অমিশ্র, গুদ্ধ,শলাকা।

আটি—(দেং) আমিশ্রিভ, গুদ্ধ, অকপট।

আটি—(দেং) আপরাধ, দোম, পাপ, ন্নতা।

আটি—(দেং) বেরের আছ্টাদন,ঝাঁপ,কটোরা,পায়খানা

ধাটী—(দেং) ব্রের আছ্টাদন,ঝাঁপ,কটোরা,পায়খানা

ধাটী—শুজান, পরিপাটী, প্রাণালী, মাতুর বিং।

বাটী—(দেং)বাড়ী, খোরা, স্তলী, আর্ত স্থান।

ভাটী—(দেং)বাড়ী, খোরা, স্তলী, আর্ত স্থান।

ভাটী—(দেং)বাড়ী, খোরা, স্তলী, আর্ত স্থান।
```

ভাটী-রক্ষ বিং, ভেঁটফুলের গাছ'।.

গাষ্টি'-মার্জন, পরিকার, বৈলাদি অক্ষণ,

সাটি —(দেং) মূত্তিকা, ভূমি।

काकि -(हर) कां हाल शाह।

রাটি - সংগ্রাম, যুদ্ধ।

माल्हे नै-(हेर) मालगाइ।

ত্বাষ্ট্রী — ছুর্গা।

```
गाष्ट्रिं - निर्माण मुक्ति विर ।
            जाहे १ - जंछ। [७] बांकता
गाकाषी -((पः) काशीरगत वीका
পাঁখাটী —(দেং) পাট গাছের শুকনা ভাঁট।।
কণাটী —কণাট দেশীয় মহিলা,রাগিণী বিং,রক্ষ বিং
मिणां चे - पूरे हुछ निर्मिष्ठ श्रामिक श्रूष विश्।
গোরাটী -শারিকা পক্ষিণী।
```

तता है - नना है, क्लान। भारता है - भारता लि शाशी।

लियाणि --(हर) स्वाधीन छ।। . (कर्नाल ी-(हेर) मताहि ।

প্রস্পরাটী - কুলের বাগান।

্ৰায়ভাটী — নদীর স্রোত বিং, আওড।

তৈলাটি —বোল্তা, বরলা, তৃণমট্পদ। গোহাটি —গরু বিজয় স্থান, হাট।

আটি—গন্ত। (৪) চতুরকার।

পরিপাটি — প্রিপাটী সুশৃখ্লা, অ্স্থাস্ত্র, উত্তম

গোকির। টী-যে শূকরেরমত বিচরণকরে; নারিকাপ্তক্ষী ব্জরাটী -(দেং) পুরাত্র ছাদ গেরামত ক্রণ!

गका गिष्टी - भशासित, भित, इत, मुङ्ग्रक्षयं।

কিলাটী -বাশগাছ।

ठक्काही -नमी।

दिन वाहा [६२৮] घामता

दिनागाएँ नि-(देर) कलाशाह।

हे छै-वाहा। (२) घामता।

कि छै -मृकत, दलाह।

कि छै -[फर] পज, लिशि।

वीछे -[वीछे ने निक्क ठायुल, शारनत वीड़ा, थिनी

विछे -शिठ वर्ग हमन।

डिडे -हिश्र नहा।

कि छै -वाँछे वस्म, साड़, कुन शाह।

खिल्छे -हिर्न छाशा, मूजाकन।

शिल्छे -हिर्न जातानी, म्हान, विमान, शहिष्ठ।

कि छै -हेष्डा, याश, यक्ड, छक्रम्न।

कि छै -क्वंग, कृति कर्षा, विमान, शहिष्ठ।

দিষ্টি — আনন্দ, হর্ষ, পরিমাণ বিং, ভাগ্যা, দৈব।

দৃষ্টি — চক্ষুং, দর্শন, ভারা, বুদ্ধি, প্রহের দর্শা।

স্পৃষ্টি — স্পর্শন, হেঁশুরা।

বিষ্টি — বেগার, বেতন, কর্ম্ম, করণ বিং, বর্ষণ।

মৃত্তি —বরাহ, ঘর্ষণ, স্পদ্ধা, আলু বিং, অপরাজিতা।

সৃত্তি —নিশাণ, জগৎ, শিল্প, গুণ, প্রকৃতি, সভাব।

গৃত্তি সকুত প্রস্তা।

বিষ্ঠি — বেগার, নেতন, কর্মা, করণ বিং, বর্ষণ।
হিষ্ঠি — বর্ষণ, মেদ হইতে জন পতন।
ভৃত্তি — তর্জন, ভাজা, দল শৃত্ত উত্থান, শ্নাবাটী।

চিরিন্টী —উঢ়া বা অনুঢা,শিতৃ গৃহস্থিতা কন্যা, যুবতী কুষ্ষ্টি — হুরভিসন্ধি, মন্দাভিপ্রায়।

नः सृष्टि - गर्वाम, मःगर्ग, উপমালকার বিং। नः रुष्टी - कु, এकान्नवर्ती, मःयुक्त। পরীষ্টি --অম্বেষণ, গেবা, ইচ্ছা, শুশ্রুষা। গিনিঞ্জী —[ইং] মজিদ্ব।

কে शिक्ष - [हर] तमायन विका। इं हि-जला (8) हर्ने न कर्वकी है। - ही है विर, कांगदका है। शित्रशिष्टे - अस विश ।

ভঙ্গরিটি — ভুঙ্গরীটি শিকাতুচর।

ইটি—অন্ত। [৫৩০] বড়ক্ষর।

আনাস্টি —স্টির বাহির, আসম্ভব।

আসংস্থি —সংসর্গ রহিত।

দীর্ঘদৃষ্টি —দূরদশী, বিদ্বান, দূরবীক্ষণ।
পৃষ্ঠদৃষ্টি —ভালুক, ইহারা যাইতেং পশ্ছাদৃষ্টি করে

মিথ্যাদৃষ্টি —নান্তিকতা, অসত্য দর্শন।

আপোদৃষ্টি —নিমন্দ্রি।

শুভদৃষ্টি —মুখচন্দ্রিকা, বরকন্যার পরম্পার মুখ দর্শন
দূরদৃষ্টি —দূরদশী, দূরদর্শন।
বিষদৃষ্টি —ক্রোধ নয়ন, দেখিতে না পারা।

শ্রী শ্রী শ্রী শ্রী ক্র নি পর শার শার্শন।

অতির্ধি — ধারা সম্পাত, অধিক বর্ষণ।

ঘনর্ধি — অনবরত বর্ষণ।

অনার্ধি — বর্ষণাভাব, র্ধি নাহওয়া।

অগ্রিধি — অগ্নি বর্ষণ।

ইটি—অন্ত। (৫) পঞ্চাক্ষর।

ইটারনিটি —(ইং) অনন্তকাল, নিত্যতা।

ইনস্যানিটী —(ইং) উন্মাদ।
ছিকিউরি **ট** —(ইং) মুচলিকা, নির্ভয়।
উপরিদৃপ্তি —উপদেবতার দৃপ্তি, বায়ু প্রকৌপ।
ইটি—অন্ত। (৬) ষড়ক্ষর।

্হছপিটালিট্টী —(ইং) আতিথ্য, দানশীলতা। অনুভিভারনিটী —(ইং) দৈন্য, হুর্দশা।

```
উটি—গন্ত। [৫৩১] দ্বাক্ষর।

ইভিয়ানফিক্ট্রী —(ইং) বটগাছ।

কুটি —ক্ত্রী (দেং,)দেহ, জল, টুক্রা, ঋড়, ক্ষুদ্রগৃহ।

গুঁটী —[দেং] স্বস্তু, প্রাম, শাশ্রুর গোড়া।

গুটী —[দেং] কীট জাত সূত্র, বটিকা, গোলাক্বতি বস্তু

ঘুটি —[ঘুটী] গুল্ফ, গোড়ালী।

ঘুটী —[দেং] খণ্ড প্রস্তুরাদি, পুরুষের স্থন বন্ধন।

ছুটী —[দেং] বিদায়, উদ্ধার, কার্য্য হইতে নিস্কৃতি।

কুটী —দেং] বিদায়, উদ্ধার, কার্য্য হইতে নিস্কৃতি।

কুটী —দেং] কণ্ঠনালী, কণ্ঠ।

ক্রটি —অপচয়, ক্ষতি, ছোট-এলাচী, অমান্য, টুক্রা,

কাল পরিমাণ, শংসয়, ভ্রম, নুন্নতা, কর্ত্রন।
```

क्री -[पर] जान जां हि, शाहा, एक्ट, श्रातना।

পুটী —কোপীন, আচ্ছাদন, ঠোঙ্গা।
পুটী —[দেং] মৎন্য বিং, শফ্রি মাছ।

क्कृ हि- कुछी अमरका ह ताग, कूछ कल।

ক্র টি—[রুটী] গোধুমচূর্ণ নির্দ্মিত খাদ্য দ্রব্য বিং।

ফুটি — দেং পক কাঁকুড়।

पूरी -[(पर) खी-कूकूत, कूकूती।

छँ ने -[पर] कलाय एठी, कलवक।

চুটী —কুপ সনিহিত ক্ষুদ্র জলাশয়, কুপ।
ছুটি —সন্তোম, ভুপ্তি, হুর্য, মাতৃকা বিং।

```
ত্তি—গন্ত। [ ৫০২ ] চতুরকর।

পুষ্টি — পোষণ, রুদ্ধি, স্থুলতা, সম্বগদ্ধা, মাতৃকা বিং।

বুষ্টি — কল, পরিণাম, রুদ্ধি, উম্নতি, স্তন্তি, প্রশংসা।

মুষ্টি — কুঞ্চিত পাণি,মুঠা পরিমাণ, মেরু, ঘূঁমি, বাঁট।
রুষ্টি — কোধ, রোম।

উটি—অন্ত। (৩) ব্রাক্ষর :

দেউটী — [দেং] প্রদীপ।

পাউটি — [দেং] হন্তালকার বিং।

অকুটি — [জুফুটী, ভুকুটী] জ্বভঙ্গি।

জুকুটী — [জুকুটী] কোধাদি বশতঃ জ্বর বক্রতা।

আখুটী — [দেং] বালকের আবদার।

মেসুটী — [দেং] আছ্লাদন বস্ত্র খণ্ড, কৌপিন।

পিচুটি — [দেং] চকুর মল, দূষিকা।
```

मू कृति -- अअ्ति स्थारेन, आअ्त महेकान, मू हि।

বিছুটী — র্শ্চিকালী লতা, প্রানিদ্ধ রক্ষ বিং।
বধূটী — কুদ্র বধূ, বালিকা বৌ, যুবতী স্ত্রী।

कावृष्टि -[प्तर] कर्व शर्मन, कावशना।

পটকুটা —বস্ত্রগৃহ, তাঁবু, শিবির। গ্রন্থকুটা —লেখ্য স্থান, চিত্রাধার।

श्रुकृषी — विस्षे।।

```
विष्ण विष्ण
```

দঙ্গমকুটী —আতপত্র, ছত্র, ছাতি।

স্বতকু টি-চরকার টেকো,।তুলার পাইজ।

পেটা —[দেং] পেট বন্ধনী, ঝাঁপি, পেড়া।
ফেঁটি —[দেং] তুলা কি স্থতার পরিমাণ বিং।

এটি-অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

চেটী — নাগী, চেড়ী, কিন্ধরী, সেবিকা, পরিচারিণী।
ঠেঁটী — [দেং] ছুষ্টা, মুখরা, বিধবার•পরিধেয় বস্ত্র বিং

जनकूकी -गार्हिल।

(थी - जम्भें का मूक।

विष —[पर] जनमा, कन्मा।

```
वंकि-न्याः [ ४०४ ]
(छी - [तिः] छेशहात, नकत ।
एक्ट्री-[हर] थिष्ट्रत गांछ।
           এটি—গত। (৩) ত্রাক্ষর।
लाएमणी -(हर) रुविछा, काना तहना।
नार्टि कि -(हर) निक्ठब्रां किलोना।
क्षित्रणी -(इ९) शायम, कित्रमा।
ডিছেট্রী —(ইং) আমরক্ত, গ্রহণীরোগ।
आाल्टेन्ट्री—(हेर) कलाशाष्ट्र।
ঋকেতি —এহ নক্ষত্রাদির পূজা।
জাতে छ - সংস্কার বিং, সন্তানের জাত কর্ম।
পুতে छि - योग, পুত্रकचा रा वळा।
অন্ত্যেষ্টি —শেষ যক্ত, শবদাহাদি চরম কার্য্য।
পরেষ্ঠি - বদা।
नत्गा हि - नवात किशा।
            धि — जस । (8) ह्र्न्भत ।
 জিওমেটী—(ইং) জ্যামিতি।
            এটি—অন্ত। [৫] পঞ্চাকর।
 नवनरणि हि—नवात्र भाम।
             এটি ৮ অন্ত। (৬) ষড়কর।
 আগ্রহায়ণে ষ্টি--নবার কুতা।
             विषि-ञस्र। (२) घाणत।
 देश ही-गना विश्व ध्यानामन ।
```

[000] ভটি-গন্ত। ७३— शदा (२) घाकता का हि - [का है] मरशा विर. [500,000,00] ক্রোর, কোমর, কটি, অস্ত্রাদিরপ্রান্ত। (थारि — (थारी) हजूता खी, धूर्छ। नाती, तिमका खी। ८५१की -नाही, नाडी। काणी --शीवत, क्लाल, मान। तारि — (बांधी हुकू, मरमा विर, भक्ती विर, (ठाँ है। রোটি — রোটী গোধুমচুর্ণ দারাপ্রস্তুত পিষ্টক বিং। ওটী-তাওঁ। (৩) ত্রাক্ষর। करता है - किरता है। गाथात श्रुनि, भिरता दि।

गंदशही -- त्रश्छी, कुन वार्शकू, वर शबा। गारकार्री—हर वामगाइ। • तार्साधीः - हिर्] राष्ट्रामा । ওটি—অন্ত। (৪) চতুরক্ষর। শতকোটি - বজ, অশনী,একরন।

जनारका जि-अजन बाता यादात मृलाद्य, जूर्त, वर्क म कहरता हि-मदमा विर, काँकिला माछ। তবুরোটি--যেদকল প্রাণীর চপু অতিশয় সরু।

त्याष्ट्रीरमा कि-(तर) खूनकः,, गांभागकः। इं डिर्गा कि—[इर] नीनगाइ।

ওটি— সম্ভ। (৫) পঞ্চাক্ষর।

भाजनकां ही - यहारमत नाम जर्ड विरा

```
[ 609 ]
                                         ত্রাক্র
                ট্। (১) একাকর।
টু --(ইং) দুই, অতিশয়।
ট্র —(ইং) সত্য, সরল।
            अर्छ - अस । (२) घा कत ।
কটু --তিক্ত, কষায়, কর্কশ,সুরভি, কুৎসিত, ছুর্গন্ধ।
চটু - गमग्र, अ भिष्ठेवाका, উদর, আगन विः, উচ্চৈঃ अत
পটু —নিপুণ, তীক্ষ্ণ, হিংস্রক, নির্দ্ধয়, পাংশু লবণ,বাক্-
       পটু, ব্যান্দের ছাতি, চতুর, নীরোগ, মধুর,
       উজ্জ্বল, প্রাক্ষুটিত, উষ্ণ, বিস্তৃত, কঠিন, জুয়া-
   ে চোর, পটোল, পলতা, করলা।
বটু —বালক কর্মচারী, ত্রাহ্মণ কুমার, নির্দোধ ব্যক্তি
ঘন্ট্ —প্রতাপ, উত্তাপ, গজঘন্টা।
             অটু—অন্ত। (৩) ত্র্যকর।
অকটু -- সুস্বাদ্ধ, তিজতা রহিত, যাহ। ঝালনহে।
একট্ট -কিঞ্চিন্মাত্র, কিছু।
ত্রিকটু — ভ ট-পিপুল-মরীচ, এই কটুত্রয়।
```

অপট্ কার্ব্যাক্ষ্ম, অসুস্থ, অমুখর, রোগী!

অবটু —গ্রীবা, ঘাড়, গর্ভ, কুপ, রুক্ষ বিং।

निष्के -- स्ठीभळ, अक्टकान्न, नाम मर्थर।

অরট্র —রক্ষ বিং।

বাক্পটু-- সৎকথক, বাগ্মী, মিষ্ট ভাষী, উত্তম বক্তা।

नतर्षु - क्रकलाम, हिक् टिकि, बांबू, भ्रम, मधुंमिकिका

```
প্রত্ন পর। (৫০৭) ব্যক্ষর।

মুথকট্ — মুথর, হুর্পাখ, নিন্দক।

ক্রেতিকট্ — হুঃপ্রাব্যতা দোম, কঠোর শন্ধ।

মায়াপট্ — কুহকী, জান্তিজনক।

কার্য্যপট্ — কার্যাদক্ষ, কর্মাঠ।

চাট্পট্ — ভাঁড, প্রতারক, মোসাহেব।

বহুপট্ — ভাঁড, প্রতারক, মোসাহেব।

আট্— অন্ত । (২) দ্যক্ষর।

চাট্ — প্রিয়বাক্য, তোষামোদ, (দেং) লৌহপাত্র বিং'।

টাট্ — (দেং) ক্ষুদ্রাকার জন্ম, টানন, আকর্ষণ।

হাট্ — (দেং) জানুসন্ধি।
```

वर्षे—जस्र। (३) जाकत।

শলাট্ — অপক ফল, মূল বিং, বিল্ল, বেল।

এটু — অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

বেঁটু — (দেং) পাঁচড়ার দেবতা, ঘণ্টাকর্ণ, মঞ্চলপুত্র।

এট्—गंछ। (०) ब्राक्तत।

-कक (ति शकी।

কক্যাট্র —(ইং) কাকাতুয়।

गেট্ -- ফল বিং, তরমুজ।

' लाहे - लाहे, जिला, जिला।

--- गीलवर्ग मिक्का विश ।

बर्छ। विका निकार थऐ—बरु। [8] **ठ**ूतकतः कक् (तष्ट्रे — कत्रकिंद्रा शक्ती।

अटि—अछ। (२) घाकत। এটে —(দং) কলাগাছের থোড়, কদলীমূল।

' वँ रहे—(:पर) छिष्कि है। (वँ एवे---(प्तर) वागन, थां है, श्रेर्स । মেটে—(দেং) মুনায় পাত্র, পাঁঠার অন্তরস্থ খাদাবস্ত বিং

हो। (১) अकाकत। (छै।—(हेर) शारमत जाङ्गल । ·

জাটো—গন্ত। (২) ঘ্যক্ষর। মাটো-[(দং] जनम, धीत, मन्म, छिना, कर्मा निथिन ।

ইটো—সন্ত। (৩) ত্র্যক্ষর। मकुरेटो [रेर] मना ।

शरहरही-[हेश] जानू । এट्টा-अस्ट। (e) প्रकाकत।

• छूडेहेशरहरो--[हर] नान यानू।

পঠ — (ধা) পাঠ ক্ল-পঁড়া, পাঠক, শাসী, পঠি, শাঠা।

মঠ — (ধা) বিস্তা-মর্পন, মঠিত।

মঠ — (ধা) বক্ষনা, মঠ, মাঠন, মাঠ।

হঠ — (ধা) বলাৎকার, হঠ-হঠন, হঠিত, হঠাৎ।

অঠ — (ধা) অর্থ ঐ।

কঠ — মুনি বিং, ব্রাহ্মণ, স্বর, শ্লক্ষেদ, উপনিষদ বিং

ঠঠ — অব্যক্ত শক্, ঠন্ঠন্ শব্দ।

পঠ — (ধা) পাঠকরা।

মঠ — টোল,পাঠশালা,মন্দির,গাড়ি,দেবালয়,আখড়া।

মঠ — খল, পাজি, মূর্য, নায়ক বা স্বামী,(যে বাহ্যে

এক জনাকে, আন্তুক সান্ত ব্রীকে ভালবাগে)

ধুন্ত রা, কুল্কুম, উদাসীন, লৌহ, টগর পুস্প।

भेठ - (धा) वध क्रु, शीफ़्त कता, श्रानस्य कता।

মঠ -(ধা) গমন করা।

হঠ — বলাংকার, লুঠ, প্রসভ, পশ্চাদ্গতি।

ঠঠং — অব্যক্ত প্রমি, ঘঠাদির বাছা।

অঠ — (ধা) গমন, প্রাপ্তি।

কঠ — কঠপ্রমি, গলা, গলদেশ, নিকট, মৃতপ্রায়।

কঠ — অবিবাহিত, থর্ম, বামন, কুন্ত, প্রাম অস্ত্র।

কঠা — কঠ মংক্রান্ত, কঠোজারিত।

প্রেষ্ঠ — অধ্যক্ষ, প্রোষ্ঠ, প্রধান, অগ্রগামী।

ষষ্ঠ — ভরের পুরণ, যাহা দ্বারা ৬ সংখ্যা পুরণ হয়।

অঠ—অন্ত। [৩] ক্র্যক্ষর ৷

ঠ-ঠ-ঠ — ঠন্ঠন্ শন্ম, অব্যক্ত প্রমি।

নিপঠ — পাঠ, অধ্যয়ন।

কমঠ — কচ্ছপ, বাঁশ, সজারু, সম্যামীদের পাত্র বিং।

কামঠ — কাচকড়া, কার্ম্বক, দন্তাঘাত, জলজন্ত বিং।

কর্মাঠ —কর্মদক্ষ, কার্য কুশল, পারক, ক্ষমতাশালী দর্মাঠ —স্তনের অগ্রভাগ,চুচুক, যিজা, কামুক, মৈথুন।

উৎকণ্ঠ —শৃঙ্গারের ষোড়শ বন্ধান্ত গতি এয়োদশ বন্ধ, ব্যক্ত

জরঠ — নিষ্ঠুর, জীর্ণ, পাঁশুটে, রুদ্ধ, জলা।

রমঠ — রামঠ হিন্দ, হিং।

নিশঠ -বলরামের পুত্র, অকপট।

त्मारकर्थ-छरकर्श युक्त, भाक्काती।

একণ্ঠ — নীলকণ্ঠ, শিব, করির উপনাম।

व्याकर्ष - भनतम् शर्गुछ।

দীৰ্ঘক্ত - বক, আয়ত্থীব।

অস্রকণ্ঠ -বাণ, শর। নিতকণ্ঠ —শ্বেতবর্ণ কণ্ঠ যুক্ত, দাভাহ পক্ষী, ডাকপাখী निजिक्ष - नीलक्ष्रं, शिक्, महादम्य, डाक्यांथी। শিতিকগ - সমুর, দাত্যুহ পক্ষী, ডাকপাখী!

সূত্রকণ্ঠ —ব্রাক্ষণ, খঞ্জন পাখী, পারাবত, ঘুদু। চিত্রকণ্ঠ -বনকপোত, পায়রা, খুঘু। মুক্তকণ্ঠ —উজৈঃখরে, গলা ছাড়িয়া দেওয়া। রক্তকণ্ঠ — সুস্বর কণ্ঠ, যাহার স্বর শ্রুতি সধুর। মধুকণ্ঠ -কোকিল। উপকণ্ঠ — নিকট, সমীপ, গ্রামান্ত, অশ্বের ৫ম গতি

শ্যামকণ্ঠ —ময়ূর, শিব, পক্ষী বিং। ক্ষীরকণ্ঠ —স্তন্তপায়ী শিশু, বালক। হারিকণ্ঠ-কে। কিল, পিক, পরভূত, হার্যুক্ত কণ্ঠ। कलकर्छ - शातांवर, क्लांकिल, इश्म, अवत विशिष्ठे।

कालकर्छ - नीलकर्छ] भित्रम् त, हस् है, थक्षम, साक्राशी

পार्ठ - बाद्वलि, अधारान, शार्धा अःग, त्वनाधारान ।. সাঠ —ব্সু, পথ, (দেং) সয়দান, গোচরণভূমি, প্রান্তর পাঠ্য —পাঠের উপযুক্ত, পঠনীয়। শাঠ্য —শঠতা, ধূর্ততা, খলতা। কাষ্ঠ — অগ্নি যাহা দারা দীপ্তি পায়, কাঠ। জাঠ-অন্ত। (৩) ত্র্যকর। চৌকাঠ —ছারের অধঃকার্ছ, ছারের চতু দিগত্ব কাঠা

निणार्ठ - পठेन, जभाग्न । विलार्घ -वान, भत, इसू।

বিভশাঠ্য-কুগ্রণতা, ব্যয়কুঠতা।

আঠ— সম্ভ। (৪) চতুরক্ষর। রইকাঠ —পুষ্করিনী উৎসর্গকালীন তন্মধ্যে প্রোতকা इठे-जलु। (२) बाकत्।

शीर्ठ — es शीर्र शान, त्वनी, शिंड़ी, को कि, विष्ठेत, क्यागन দ্বিষ্ঠ — ছুরেতে স্থিত, উভয়স্ত। নিষ্ঠ —স্থিত, বিশ্বস্ত, অভিনিবিষ্ঠ, মগ্ন, ধার্ম্মিক, খির। প্রষ্ঠ -শ্রীরের পশ্চান্ডাগ, পিট, পাত, চর্ম গাত।

প্রষ্ঠা — পুষ্ঠ দার। ভারবাহক অশ্ব। ইঠ—গন্ত। (০) ত্রাক্র।

ছুরিষ্ঠ - বহুল, অধিক, অনেক। দ্রাঘিষ্ঠ — অভিশয় দীর্ঘ।

ল্ঘিষ্ঠ — গ্তিল্মু। ওজিষ্ঠ -অতিশয় তেজম্বী, বলবান। অঞ্জিষ্ঠ —সূর্য্য, দিবাকর।

পুঞ্জিষ্ঠ — রাশীকৃত। মঞ্জিঠ —লোহিত বর্ণ, রান্ধা।

পটি ষ্ঠ — সভিশন্ন পটু, স্কচতুর।

[488] প্রতিষ্ঠ —প্রতিষ্ঠাষিত, গৌরব যুক্ত। गिछि - अिथा दुकिमान्, धीमान्, विदवकी। প্রাথিষ্ঠ —অতিশয় স্থল, অতি রহৎ, প্রশস্ত কোদিষ্ঠ-অতি ক্ষুদ্র। तिष्ठं - अठि निक्रेवर्जी, निश्रुत । মদিষ্ঠ —অতিশয় কোমল। রুন্দিষ্ঠ — অতি সুন্দর, মর্ম্ম শ্রেষ্ঠ, অতি মুগ্ধকর। মেধিষ্ঠ —অতিশয় মেধা বিশিষ্ট। সাধিষ্ঠ —অতি দুঢ়, অতিশয় সাধু, অতি কঠিন, যোগ্য কনিষ্ঠ — অনুজ, কুদ্র, বয়ঃক্রমে ছোট, অতি কুদ্র। ঘনিষ্ঠ —অভিশয় ঘন, নিকটস্থ, অতি নিকট, আসম। ত্রিষ্ঠ —অতি তুরু, ক্ষীণ তর, অতি সূক্ষা

অগ্নিষ্ঠ — কটাহ, তঙ্লাদি ভর্জনার্গ লৌহ ময় পাত। ক্ষেণীষ্ঠ-অতি কিপ্রগামী, কিপ্রতর, অতি শীঘ। ত্রপিষঠ—অতিশয় লজ্জিত।

পাপিষ্ঠ —অতিশয় পাণী, অধার্দ্মিক। অল্লিষ্ঠ —অত্যন্ত অল্ল।

मितियुर्व — वर्गक्त, वर्गीय ।

যবিষঠ — অতি যুবা, কনিষ্ঠ।

দবিষ্ঠ — সুদূর, অতান্ত দূরবর্তী।

স্থবিষঠ —অভিশয় গোটা।

विशृश्ये — स्रनाम श्रामिक ताका, वास्ट्रप्त ।

ছুরিষ্ঠ —কুরভা, খলতা, অতিশয় মন্দ। বরিষঠ —শ্রেষ্ঠতম, তাম, মরিচ, তিভিরি, যোগ বিং দ্র চিষ্ঠ — অতিশয় দৃ । কালিষ্ঠ — খতান্ত কাল।

বলিষ্ঠ — অভিশয় বলবান, বায়ু, বিফু, গরুড়, হনুমান, • যম, মহা বরাহ, সরভ, সংপ্রতিজ্ঞা, গজুউট

বশিষ্ঠ -[বিসষ্ঠ] মুনি বিং, ত্রহ্মার মানস পুত্র। বাশিষ্ঠ - [বাগিষ্ঠ] বশিষঠ সহন্ধীয়, বোগ শাস্ত বিং। বর্ষিষ্ঠ — অতিশয় রুদ্ধ, সর্বা জ্যেষ্ঠ।

"মহিষ্ঠ — গত্যন্ত মহৎ। विकास्के - - वक्त छानी, वक्त निष्ठे, पूर्ग। र्हेर - अस । (8) हजून कत ।

रगानानीर्ठ - यानानन। शृशशीठं - शिक्मानि, शारनत वाछ।। পाम नीर्घ – भा ताथितात द्यान, भामका भरत आगन गिक्र भीठे - य द्यारन लक्ष विल आ कि इहेसार ।

यागिशीर्य -शूर्तानामि शार्टित (वमी, कथरकत विभी। শভূয়িষ্ঠ — শঙ্ল, লপ্রচুর।

[489] छेठे-- अस । সুপ্রতিষ্ঠ —গৌরবাম্বিত। জ্ঞাননিষ্ঠ —যে সর্বদা তত্বজ্ঞানে রত। পর্মনিষ্ঠ -পুণ্যবান্, যাহার ধর্মে আন্তুক ভক্তি আছে मी वंश्यो - नर्ण, जुजन ।

কাঙপুষ্ঠ —শস্ত্রজীবী, বোদ্ধা, গৈনিক পুরুষ। চিত্রপৃষ্ঠ —কলবিঙ্ক পক্ষী, চটক গ

ভগপুষ্ঠ —পশ্চাৎস্থিত বিষয়ে অমনোধোগী, সন্মুখ সমপৃষ্ঠ — অবন্ধুর, ভেচনীচ নয়। कालपुष्ठ - कह शकी, मूर्ग दिर, कटर्रत भन्न লোহপুষ্ঠ — পক্ষী বিং, কাঁক পাখী। हेरे- गर । (e) शकां कत ।

কঠিনপুষ্ঠ-কচ্ছণ, কাছিন। इंग्रे-शहर। (७) यङ्कतः।

निकीं । ज्ञाम्ये - निकीं । थाया, निकीं देशासूर्य। উঠ- शहर। (२) घुकरा। কুঠ্ —(ধা) ছেদন কুঠার, বিকল হওয়া-কুঠন, কুঠিতা

গুঠ্ —(পা) বেষ্টন অবগুণ্ঠন, অবগুণ্ঠিত, গুণ্ঠিত। कुठ - ताश विः, इक, शाम्थ! क्रिके —((मः) विश्वाम, तुःगञ्ज, अरञ्जर।

লুঠ —(ধা) পতন, 'সুষ্ঠন, লুষ্ঠিত, লুষ্ঠক, চৌর্য্য। लुके - ज्ञिरा कारी, लुहेशाहि था अरा।

कंठे -(मर) छक्ना भाषा।

[689] কণ্ঠ —(পা) খোঁড়ান, ভালন-হ। কুষ্ঠ —সঙ্কুচিত, জড়, অলস,ব্যাহত, প্রতিবন্ধ, ভোঁত। छर्छ -(भा) त्वष्टेन कता। লুষ্ঠ —(ধা) চুরি করা, লুঠিয়া লওয়া। कुष्ठ -कुष्ठ द्वांग, महावाधि, दिस विर, ब्रक्ष विर, कुछ । উঠ – গন্ত। (৩) ত্রাক্ষর। বারুঠ -শব বহিবার খড়া, অনন্ত শ্ব্যা।

অকুষ্ঠ —প্রতিভাযুক্ত, অব্যাহত, অসক্ষিত, অকুর।

विकुर्थ —[रेनकुर्थ] नियुः, हेल, नियु भूती। ংগালুঠ —পরিহাণ যুক্ত, ঠাউার সহিত, পার্থপরিবর্ত্তা দি गृकुष्ठे - मञ्जत, मन्नाभी, मञ्ज दिः।

. अङ्ग्रे - तुक्षाञ्च, तृत्ः। जाञ्च। छेठे—जछ। (४) ठडूतकत। • ব্যয়কুণ্ঠ —কুপণ, অদাতা, সুম।

কালক্ঠ-যমরাজ। বাহুক্ষ —কৃষ্ঠিত বাহুযুক্ত, মুলো। কালকুষ্ঠ--গিরিয়ত্তিকা, গেরিমাটী।

উঠ- গন্ত। (৫) পঞ্চাক্ষর। ধবলকুষ্ঠ —ব্যাধি বিং। গণিতকুষ্ঠ—র্দ্ধিপ্রাপ্ত কুষ্ঠরোগ•।

वर्ठ-अछ। (२) घामत। মেঠ —হস্থিপক, মাহত।

কঠি—জন্ত। [৫৪৮] দ্বাক্ষর।

কেই —বাধা, ক্ষতি, প্রতিবন্ধক।
শ্রেষ্ঠ —প্রধান, জ্যেষ্ঠ,কুবের,রাজা, ব্রাক্ষণ, গৌত্বন্ধ।
জ্যেষ্ঠ —প্রপ্রজ,অধিক বয়স্ক,উৎকৃষ্ঠ, প্রব্লন,জ্যেষ ঠমান
স্থেষ্ঠ —অতিশ্বির, হিরতর, দৃত্তর।
প্রেষ্ঠ —প্রিয়তম, অতিশয় স্নেহ পাত্র।
প্রেষ্ঠ —প্রার্থন, অত্যধিক।
প্রতি—অন্ত। (৩) ব্রাক্ষর।
আজ্যেষ্ঠ —জ্যেষ্ঠের ন্যার যাহার আচরণ নহে।

সব্যেষ্ঠ — সোর্থি, রথের বামপাশ্বস্থ বীর।

এঠ—অন্ত । (৪) চতুরক্ষর।

শাকশ্রেষ্ঠ — বাস্তুক শাক, বেতোশাক।

পত্রশ্রেষ্ঠ —বেলগাছ। বস্তুশ্রেষ্ঠ —রৌপ্য, রজত, রূপা। বাহশ্রেষ্ঠ —অশ্ব, ঘোটক, হয়, বাখী, তুরঙ্গ।

ত্রীহিশ্রেষ্ঠ—শালিধান্ত। বর্ণজ্যেষ্ঠ —ত্রাহ্মণ।

ঐঠ — অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

সুরজ্যেষ্ঠ — ব্রহ্মা, প্রজাপতি, পিতামহ। রসজ্যেষ্ঠ — মধুর রস, শৃকার রস।

জ্যৈষ্ঠ — দ্বিতীয় মাল, শ্রেষ্ঠত্ব। জ্যৈষ্ঠ্য—জেষ্ঠত্ব, উৎকর্ষ, শ্রেষ্ঠত্ব।

শোঠ - পা পিষ্ঠ, ধৃৰ্ত্ত, মূর্থ, অলম, নীচ।

প্রোষ্ঠ — নিষ্ঠীবন পাত্র, পিক্লান। ७म्के - परुष्ट्रम, छेशदतत हिं। काम रे--शाला, छमत गशा, विस्रा, मृज, गृह मभा।

গোষ্ঠ-গরু সকল যে স্থানে থাকে, গোস্থান, গোঠ। (थार ठ-मरना विः, शूँ हि माछ, वलीवर्ष । अम ठा - उम टिशकाया वर्।

७ठे-जन्छ। (:) बाकन्। দক্ষোঠ —আঁকড গছ।

श्रादकार रे - अध्याक, घारतत जर्भ विर, महल। বিষোষ ঠ — যাহার ওষ্ঠ বিষের ন্যায় রক্ত বর্ণ। ওঠ-তান্ত। (৪) চতুরক্ষর। অরকোষঠ —গোলা, তণ্ডলাদি রাখিবার স্থান।

অধরোম্ঠ —ঠোঁট, অধর। ॐठे—ञस्र। (२) मुक्ता।

অশ্বোষঠ —অশ্শালা, আস্তাৰল

खेर ठा- ७व टिंग फार्या वर्ग। छेठे—शह। (७) बाक्स त।

বিষৌষ্ঠ — রক্ত বর্ণ ওষ্ঠ বিশিষ্ট । •

```
[ ००० ] चाकता
केश-गरा
लासीम् के - उद्घे, उठ, जारमत्तर '
            र्रा। (১) এकाकता
क्रामंड--(त्मर) शाम, हत्रल, शा
         कार्र। - शहर। (२) घाकत।
कश-जीता, मर्मात का क्रा।
         অঠা—গন্ত। (৩) ত্রাক্ষর।
कागठ।-(पर) भन्नक।
          তাঠা-ভান্ত। (৪) চতুরকর।
দন্তশঠ।—চাঙ্গেরী, কুদ্র আল্লিকা।
        আঠ।—গন্ধ। (২) দাকর।
জাঠ। —(দেং) কাথ, নির্যাস, রুকের রুস।
কাঠা —৩২০ বর্গহস্ত পরিমাণ ভূমি, ২॥ মের পরিমাণ
 পাঠ। — শুষ্পের লতা বিং, নিমুখী।
পাঠ। -(দেং) ছাগ।
 মাঠ। —(দেং) নবনীত, তক্র, ঘোল।
         আঠ।—অন্ত। (৪) চতুরকার।
```

জাড়কাঠ।—কড়ি কাঠ, প্রস্থের কাঠ। পূর্বকাষ্ঠা--পূর্ব দিক্!

দ্বিঠা - অগ্নিপত্নী, সাহা।

इंग्री-शह । (३) माक्त ।

চিঠ। — [দেং] জমি জরিপের কাগজ, হাতফদ

পিষ্ঠা —(দেং) পিষ্টক বিং।

```
জিঠা — [দেং] মিপ্ত।

কিঠা — [দেং] ফল বিং, মৎসা বিং।

কিহা — কিবাহ, নাশ, যাজ্ঞা, দৃডভক্তি, বাবাহা, বিশ্বাদা।

কিহ্ঠা—মল, পুনীষ, গু।

হঠা—ছান্ত। (৩) ভ্ৰাক্ষর।

গঁইঠা — (দেং) শুক্ষ গোবর।
পাইঠা — পিইঠা] (দেং) দিঁড়ি, ধাপ।

মজিষ্ঠা—স্বন্যখ্যাত রক্তবর্ণ লতা বিং।
প্রতিষ্ঠা—স্ব্যাতি, পুথিবী, ব্রতাদির উদ্বাপন।

মদিষ্ঠা — সুরা বা মদিরা।
ক্নিষ্ঠা —কনিষ্ঠা অসুলি, ছোট ভগিনী।
```

धनिषठी -- नक्क विः।

শ্রবিষঠা —ধ্রিষ্ঠা নক্ষত।

পাপিষ ঠা-পাণীয়সী, ছুরাচারিণী।

श्रुलिशिशे -((मर) शिष्ठेक विर ।

উঠ।—(দেং) উথিত হওয়া।

मिल्यरे। - अञ्चल नाती, तज्ञला खी।

इंग्री-गरु। (8) हज्तकत।

মুখবিষ্ঠ। — তৈলপায়িকা, তেলা পোকা, আশুলা। উঠ।—অন্ত। (২) দ্যক্ষর

সুপ্র তিষ্ঠা-যশঃ, মদিরা নিবেদন, ছল্দে। বিং।

ধর্মনিষ ঠা - ধর্ম বিষয়ে ঐকান্তিক শ্রদ্ধা।

```
कार्ड-जन्छ। ( ४६३ ।
মুঠ। —(দেং) কুঞ্চিত করতল, ধজাাদির বাঁট।
क्रिं।—(८मर) विश्वाम, कृष्ण, अटसर ।
           छेठां-जहा (≈) बाक्ता।
भाक्ष्रिं। छक्षा, कूँछ।
           উঠ। — অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
দামাউঠা—[ওলাউঠা] (দেং) বিস্টকা রোগ।
           এঠ1-অন্ত। (१) দ্বাক্ষর।
জেঠ। — দেং পিতার জ্যেইভাতা।
লেঠা — দেং] উৎপাত, ঝঞাট, গোলবোগ, শঙ্কট।
रका, की -- नक्क विर, शका, मधामाक लि।
প্রেষ্ঠা — জন্তা, প্রিয়ত্মা।
            এঠা- অন্ত। (१) ত্রাক্র।
 नरवाष्ठ।—नात्रथि, यञ्चा, तथहानक ।
            ঐঠ। – গন্ত। (२) দ্বাকর।
टेलो -[ দেং] गिँ ড়ि, धाल, জরিলী চিঠার খতিয়ান।
             ওঠ। – অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।
 কোঠা—[দেং] অটালিকা, ইপ্তকময় গৃহ।
            छाठि—अङ। (२) हाकता
```

शिं — शर्रेन, शार्रे, अभागान !

वार्ष -वारि, वीहि, ছत्मा विश

হঠা —কুন্তিকা, পাণা।

শঠী —বনহরিদ্রা, সুগিন্ধি দ্রব্য বিং, শুঁট।

```
স্কান্তি—সন্ত। [ ৫৫৩ ] দাকর।

কাষ্ঠমিটি—চিতা, শ্বানা।

কাষ্ঠমিটি—চিতা, শ্বানা।

কাষ্ঠমিটি—চিতা, শ্বানা।

কাষ্টি—সন্ত। (৫) পঞ্চাকর।

কোকিলকণ্ঠী—বে স্ত্রীর কণ্ঠসর কোকিলের ভারা মধুর
জামাইর্মন্তী —হৈল্যন্ত শুক্রা হন্তী।

অব্যাহন্তী —হৈল্যন্ত শুক্রা হন্তী।

অব্যাহন্তী —কৈন্ত শুক্রা হন্তী।

অব্যাহন্তী —মাঘ মাদের শুক্রা হন্তী।

শীতলার্মন্তী —মাঘ মাদের শুক্রা হন্তী।

আঠি—সন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

জাঠি—সন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

জাঠি —[আঁঠি] (দেং) বীজ, বীচি।

কাঁঠী —িদেং] শুক পাথির গ্রার্থেন, প্রবাল বিং,

শ্বাভুমন্ন বর্ত্ত্রাকার বস্তাবিং।
```

পাঠা —পাঠক, চিত্রক রক্ষ, চিতাগাছ, পাঠশীল।

আঠি-অন্ত। [8] চতুরকর।

চতুষ্পাঠী—ৰে স্থানে চতুঃশাস্ত্ৰ পঠিত হয়, চৌবাড়ী। ইঠি—অন্ত। (২) ঘ্যক্ষর।

भौति — (पर) छाती, छातनी।

চিঠী—(দেৎ) পত্ৰ, লিপি

नाठि —[नाठी] (मः) यष्टि, मछ, वाड़ि।

পলাক। সি—(দেং) হস্তালন্ধার বিং, সোণালী। একপাঠী —একত্র পঠনশীল, সহাধ্যায়ী।

```
ভিটি—অন্ত। [ ৫৫৪ ] দ্বান্দর।

ইঠি—অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।

নরপীঠী—অন্তনাক্ষ, ছক।

উঠি—অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

কুঠি —[কুঠা] পর্কত, রক্ষ, অউগলিকা, বাণিজ্যালয়।

মুঠি —[মুঠা](দেং) কুঞ্চিত করতাল, খড়গাদির বাঁট,মুঠা

লুঠি —(দেং) বলপূর্দ্দক অপহরণ, চৌর্যা রন্তি করণ।

লুঠী —লুঠন, গড়াগড়ি দেওয়।

শুঠি —[শুঠি] শুক্ষ আদ্র কি, শুঠ।

কুঠী —কুঠ রোগ যুক্ত, জন্ম গ্রহাদির ফলাফল গণনা।

শুঠী —শুকু আদ্র কি, শুঠ।

এঠি—অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।
```

জেঠা —[দেং] গৃহ গোধিকা, টিক্টিকী, জ্যেষ্ঠতাতপত্নী

এঠি—অন্ত। (৩) ত্রাকর!

এঠি-- अस । (৪) চতুরক্ষর।

শ্রেষ্ঠী —বণিক বিং, শেঠ।

(जार्की-गृह भाषिका, हिकहिकी।

গাঙ্গেষ্ঠ ী-কটশর্করা লতা, নাটাগাছ।

প্রমেষ্ঠী — ব্রহ্মা, মন্ত্রদাতা, শালগ্রাম বিং।

গোষ্ঠী -সভা, সংলাপ, পরিবার, জাতি।

প্রার্ছ । শদরী মংস্তা, পুঁটিমাছ।

মহাজ্যৈষ্ঠী—নক্ষত্র বিশেষ যুক্তা, জ্যৈষ্ঠী পূর্ণিমা ওঠি—অন্ত । (২) দ্বাক্ষর ।

[६६६] घाकता এঠো-- जस । ওঠি—অন্ত। [৪] চতুরক্ষর। এককোষ্ঠী —কটল মৎস্য, বেলেম, নাইট প্রভৃতি।

করকোষ্ঠী —হস্ত তল স্থিত রেখা। श्वरशाष्ट्री -((मः) मकूला, ऋरशांख, शतिवात । পানগোষ্ঠী -মত্মপান সভা, ভৈরবী চক্র । ভঠি—অন্ত। [৫] পঞ্চাক্র।.

विভক্তকোষ্ঠी—याशादमत दनश्मरा वावधान थादक। অঠু—অন্ত। (৩) ত্রাক্ষর।

–সময়, অসত্য, প্রতিকুল, নির্দ্ধেষ, শোভন। উঠু—অন্ত। (২) দ্যক্ষর। তুর্তু — সন্দ, অনুচিত, অশিষ্ট, অসচ্চরিত্র। সুষ্ঠ —অতিশয়, শ্রেষ্ঠ, সুন্দর, সত্য।

ইঠে-जन्छ। (८) চতুরক্ষর। অষ্ট্ৰেপ্ত । गर्मि मिरक, गर्सा एक ।

এঠে।—जछ। (२) घाकत। (कर्छ।-कार्छनिर्भिष्ठ कल रगहनी, कार्छमয় পাত।

```
छ। (১) धकांकत।
ড-শিব, শব্দ ভয়, ত্রাস, বাড়বানল, ঢক্কা বিং, চাষ-
    शकी, इंशांख को माती, अंगिता, जीमा, श्रविती
ক্ষমা প্রভৃতি বুকার।
        অড—গন্ত। (২) দ্যাকার।
কড্ —(ধা) ভেদ-কণ্ডন, কণ্ডিত, কণ্ডার, কণ্ডনী,
  ভোজন কড়ার, কড়ম্ব, কড়্মী।
খড় - (ধা) ভগ্তন-খণ্ড, ভেদন-খড়া।
গড় —(ধা) গলন-গণ্ড, গণ্ডু মা।
গড় - (ইং) ঈশ্বর, প্রমেশ্বর।
চড্ —(ধা) রোহ-চণ্ড,প্রচণ্ড,চণ্ডী,চণ্ডাল,উচ্চণ্ড,চণ্ডু
গড —(ধা) গণন, পণ্ডা, পণ্ড, পণ্ডিত, পাণ্ডুর, পাণ্ডু
মড্ —(ধা) ভূষণ-সগুল,মপ্তিত,সণ্ডপ,মণ্ড,মঙুকা।
বুড্ —(ইং) রক্ত, রুধির।
দভ্ — (ধা) দণ্ড – রু, দমন, দণ্ডী।
বণ্ড্ —(ধা) ত্যগ-বণ্ডন, (ইং) খৎ, ঋণপদ্ধ।
कर्छ -(हेर) तृगी, तृष्कू।
लर्ड् -(इर) পরমেশ্বর, উপাধি বিং।
बल —(हर) हाकशृष्टा।
লড্ড —ছুৰ্জন, খামাধু ব্যক্তি, মণিত ব্যক্তি
হড় — গন্ধি, হাড়।
     —विश्रुल, तुर्, रष्
```

—गथुकत, खगत। —তিভিড়ী রক্ষ, দৈত্য বিং, যমদূত, তীক্ষ্ণ, উগ্র, উষ্ণ, অতিশার কুদ্ধ, শুস্ত শিশুন্তের অনুচর, অতি কোপন, (ধা) রুপ্ত হ।

- **मगन, त्गांका इ**रेशा माँ फान, 8 रुख याष्टि, यूक, रेमना, सम, जम दिः, मनाम धर्मा, विनिधार, শান্তি, চব্বিশ মিনিট কাল, লাঠি, শিক্ষা।

পণ্ড - নিফল, নির্থক। কণ্ড — জঠর, উদর, (ইং) তহবীল। →হস্তাদি রহিত, বেঁড়ে, অবিবাহিত, ধ্রজভজ।

ভণ্ড - নর্দ্ম সচিব, কৌতুকী,ভাঁড়,(ধা) ভাঁড়াম করা। —গাদ, মাড়, ফেন, সার, শাক বিং, ভূষণ,

এরও রক্ষ, ভেক, (ধা) মুড়ন, পীড়ন করা। —ধূর্ত্ত, আশ্রম বিহীন, অধার্মিক, বন্ধা।

ल ७ - विष्ठां, नाष, नाष । - इस, तलीन्फ, डेक, कीन, शब गमूह, श्रीयात ।

निथन्छ — मয়ुत পুছ,বয়,কাকপক্ষ, শিখা, ঢ়ৢড়া, জৢয়ী। পোগণ্ড — বিকলাঙ্গ, অপোগণ্ড, সভাবতঃ, শিশু।

প্রগণ্ড —করুই অবধি বগল পর্যান্ত বাহভাগ।

—অত্যুষ্ণ, তীত্র, প্রাথর, ছর্কিসহ, ভরুষর,

ছেত্রকরবী, অতি কোপন, ছুদ্ধর্য।

প্রতাপী, উদ্ধত, প্রাগ্রহ, পরাক্রাম্ব,

পৌগণ্ড —অবস্থা বিং, পোগগুৰাবস্থা।

—শাস্ত, ন**ন** ৷ পিচণ্ড —পশুর, অবয়ব, উদর।

অচণ্ড

প্রচণ্ড

[600] ত্রাক্র। উচ্চণ্ড — বরাধিত, ভানক, অতিকোপন,প্রচণ্ড। বেতণ্ড —গঙ্গ, रखी, नदी, गाउन, रेड, मील। মৃতণ্ড — সুর্য্যের পিতা. কশ্যপ। পূত্যণ্ড —গন্ধকীট, গ্রেন গোকা, কন্তুরী মুগ। সার্ত্ত্ত — আকন্দ গাছ, রবি, সুর্য্য, ভাস্কর, শুকর। कामगुष - ध्रुक, का, (मन विर । ত্রিদণ্ড —বাগদণ্ড, সন্মেদণ্ড, কায়দণ্ড এই ত্রিতয়। त्वमंग्ड - रखी, कती, माठक, गङ, कूकत। সুদণ্ড —বেত্র, বেত। বান্দণ্ড —বাক্য সংষম, ভিরস্কার, ভৎ সন্।। -দোর্দণ্ড --বাহরপ দণ্ড, ভুজদণ্ড। मार्क्षण्ड - मशुत्र, मिथि। অমণ্ড — [আমণ্ড] এরণ্ড রকা। ছুমণ্ড — পিতৃহীন বালক, স্বন্ধন বিবৰ্জিত। এরণ্ড — ভেরেগ্র গাছ।

এরণ্ড —ভেরেগু গাছ।
করণ্ড —খুঙ্গী, ঝাঁপি, টুক্রি, খড়গা, পক্ষী বিং!
কুরণ্ড —যে বীর্য্য নষ্টকরে, রদ্ধিশালী অণ্ডকোষ।
কোরণ্ড—কোষর্দ্ধি, জলদোষের পীড়া।
জরণ্ড —জীর্ণ, শীর্ণ, বিগলিত।

তরণ্ড —ভেলা, সাড়, দেশ বিং, নৌকা।
কেরণ্ড —বে "ক্যেক্যে" এই শব্দ করে, শিয়াল।
বরণ্ড — বারাণ্ডা,ত্রণু, বয়সফ্টোড়া,সমূহ,বড়িশ সূত্র

বিষণ্ড — মুণাল, পদ্মের ডাঁটা।

অড্— অন্ত। (৪) কতুরক্ষর।

ফিশিংরড্ — (ইং) ছিপ।

ভূর্যখণ্ড — দগড় বাদ্য।
শতখণ্ড — সুবর্ণ, সোণা, হেম, জমু নদ, শত ভাগ।
দিতাখণ্ড—মধুশক্রা, মিছরি বিং।

সিতাখণ্ড—মধুশকরা, মিছার বিং।
স্বাদুখণ্ড —গুড়, খাঁড়।
ধরুঃখণ্ড —ছিলা শূন্য ধরুক।
চূর্ণখণ্ড —ঘুটিম, ককরে, কাঁকর।

কালখণ্ড — যকুৎ, রোগ বিং।
বায়ুগণ্ড — অজীর্ণ রোগ, অপাক।
তাতিগণ্ড — বিষ্কৃত্তাদি ২৭ যোগ মধ্যে ষষ্ঠ যোগ।
ছাত্রগণ্ড — যে ছাত্র লেখাপড়ায় যত্ন করে না।

শাস্ত্রগণ্ড —যে শাস্তাদি কিছুই জানে না। অপোগণড—শিশু, ভীরু, ভমুশীল, বিকলাঙ্গ। মহাচণ্ড —প্রচণ্ড, উগ্রতা। বায়দণ্ড —বেমা, বাপ দণ্ড, ভাত। একদণ্ড - অতি অল্ল সময়, চলিব মিনিট কাল तोकामग्ड -- किशानी, माँड I

অকদণ্ড — সের দণ্ড। জগদণ্ড — বন্ধাণ্ড, বিশ্ব সংকার।

যোগিদণ্ড—বের, বেত। •দীর্ঘদণ্ড —এরও রক্ষ, ভেরেণ্ডা গছে। রাজদণ্ড —রাজ দত্ত দণ্ড, রাজার হস্ত হিত লগুড়। বাজিদণ্ড —বাগক রুকা।

পৃষ্ঠদণ্ড - মেরু দণ্ড, পিঠের শির দাঁড়া। চিত্রদণ্ড — ওল।

বাণদণ্ড —বাণ দণ্ড, নরাজ, বেমা, বেঁউ। সানদণ্ড —পরিমাণ দণ্ড, মাপুবাড়ি।

চাপদণ্ড — জলোভোলন ও নামানের দাঁড়া, দণ্ড

বাপদণ্ড '-- বেসা, কাপড় বুনিবার ভাঁত। নবদণ্ড - রাজছত্র বিং।

```
जाउ-जारा [ १७२ ]
চর্দ্দণ্ড — চর্দারত দণ্ড, চারুক, পুংচিত্র।
খরদণ্ড — পদা।
মেরুদণ্ড — পিঠের শির দাঁড়া,মেরুভেদী সরল রেখা।
তুলাদণ্ড — পরিমাণ দণ্ড, নিক্লী, ডাঁড়ী +
ব্ৰহ্মদণ্ড — বাহ্মণের যষ্টি, বশিষ্ট মুনির বিদ্ধ যষ্টি।
লণ্ডভণ্ড 🖚 (দেং) উচ্ছিন্ন, প্রচ্ছিন্ন, ব্যতিব্যস্ত।
माय्य ( ७ -(हर) शैता।
দধিমণ্ড — দধি প্রভৃতির জলীয় ভাগ, মাং।
শাখারণ্ড — যে ছিজ শাখান্তর অধ্যয়ন করে।
জলরণ্ড - জলের আবর্ত, জল অমি, জল বিন্দু, সর্প।
          অড—অন্ত। (৫) পঞ্চাক্ষর।
ভরতখণ্ড —ভারতবর্ষান্তর্গত কুমারিকা খণ্ড।
পালাশখণ্ড-মগধ দেশ, বেহার।
 শকুলগণ্ড —মৎস্য বিং, শাল মাছ।
 लाक्नलप् — लाक्नलत मधाय कार्छ, लाक्नलत अस्।
 कमलीमग्ड - (थाड़।
 খনপাষণ্ড —ময়ুর, যে মেঘ সদশনে আনন্দিত হয়
 ক্মল্ষণ্ড —প্র সকল, প্র নিকর।
           আড—্অন্ত। (২) দ্যাক্র।
 বাড্ —(ইং) কোরক।
 গাড় —(ইং) পাগলা।
```

```
লাড্ —(ধা) ক্ষেপন, লাড়ন, লাড়িত।

ছ্যাণ্ড্—(ইং) বালি, রেণু।

হ্যাণ্ড্—(ইং) হস্ত, হাত।

বার্ড্ —(ইং) পক্ষী, পাখী।

হার্ড্ —(ইং) দৃঢ়, শক্ত।

জাড্য —জড়তা, অজ্ঞানতা, মূর্খতা, আলস্য, মৌন, শৈত্য।

কাণ্ড—গুঁড়ি, গুচ্ছ, বোঁটা, নল, বাণ, অবসর, শ্লাঘা,

প্রকরণ, ঘটনা, অধ্যায়, কুংসিং, পালী,

নির্জ্জন, সমূহ, দণ্ড, জল, ধর্গ, স্তম্ব।

ভাণ্ড—পাত্র, মূলধন, নদীকুল দ্বেরে মধ্যভাগ, অলম্বার
পাণ্ড্য —ভারত বর্ষের দক্ষিণস্থ দেশ বিং।

আড—সন্ত। (৩) ব্যক্ষর।

ইয়ার্ড্ —(ইং) উঠান, ২ হাত পরিসাণ, গঙ্গ।
```

বিয়াড

—(ইং) দাড়ি।

লিজার্ড — (ইং) টিক্টিকি।

নেফার্ড — (ইং) মেষ পালক, রাখাল।

ওয়াল্ড — (ইং) জগত, পৃথিবী,।

অকাণ্ড ' —অকাল, অকস্মাৎ, কাণ্ডহীন ।

কাকাণ্ড —মহানিষ, কাক্তিন্তু, কাক ডিম্ব।

ড্রাঙ্কার্ড্ —(ইং) মাতাল। রিগার্ড্ —(ইং) শ্রদ্ধা, দৃষ্টি।

इंगान्ड -(हेर) शाहा।

চতুরকর আড—অম্বা [৪৬৪] अकान्ड — द्वर९, जज़ुलम, सूची, छँ डि, माथा। गरकांग्ड — हिल शक्ती, हील। মৃতাণ্ড — সূর্য্য, দিবাকর। গেষাণ্ড —ইন্দ্র, সুরপতি। কুমাণড — কুমাণ্ড] জরায়ু, গর্ভস্থনী, শিবের জয়ু-চর বিং, জাণ বিং, কুমড়া, কাঁকুড়, ছুগা। বক্ষাণ্ড —জগৎ, বক্ষ গোলোক। আড—সন্ত। (৪) চতুরকর। इम्लवाक्ष् —(हेर) कूँका। काकवाग् ५ — (हर) आगी। লিওপার্ড --(ইং) চিতাবার। রক্ষাকাণ্ড —অমঙ্গল পরিহারার্থ অঙ্গর্ভ তুর্কাদি উষ্ধ ইফুকাণ্ড —শরমুগ্ন, কাশত্ণ, কেশে গ জ্ঞানকাণ্ড--বেদাংশ। ধুরু:কাণ্ড -- পুর্কাণ, শর এবং শর।সন। অপ্রকাণ্ড — কাণ্ডরহিত রক্ষ, গুলা, বোণ। शाक्षकां ए - डेडम शक, टबर्ड शा।

কর্মকাণ্ড --বেদাংশ বিং, বেদের কাণ্ড, কর্মাসমূহ

अनमान्ड. — नीर्घ अन् उत्काय विभिन्ने, कून्न ए ।

মারভাণ্ড — য়ুগের নাভি, অক্তিম পাত্র বা থলিয়া

দুঢ়কাণ্ড —বংশ, বাশ।

व्नाडाव्ड - स्नजानि वानायदा।

```
- সম্বভাল, হামাম দিন্তা।
         আড- গন্ত। (৫) পঞ্চাকর।
রাজকুপাও —তরমুজ গাছ।
         আড - গন্ত। (৬) ষডকর।
সকালকুসাও —অকাল জাত কুমাও, চুক্সা।
          इंड- बरु। (२) माकत।
       –(ইং) ছাগ শাবক, ছাগল ছানা।
िष्ठ —(हेर) तीक, तीहि, वाँ की।
পিড্ -(ধা) পিণ্ডী কর্ণ-পিণ্ডিত, পিণ্ডি।
लिङ -(हर) छ।कनि, नीना, शथ प्रथान ।
ইডা — ইডা স্তত্য, স্তবের যোগ্য, প্রশংসনীয় ।
পিও —শরীর, মাংম, ভোজ্য দ্ব্য, দেহৈকদেশ, গজ-
       কুন্ত, বল, ডেলা, অন্নের ডেলা, গোল বস্তু
       लोर, जीवका, गरहर, गास, शिर्लादक
       अटम्य थामा, (धा) लिखी कत्रव ।
       —(ধা) অনাদর-হিণ্ডিত।
        –(इर) जाल।
            इंड-जरु। (०) बाक्सा
         -(हर) शार्श, शार्श, शक, जल।
         -(ইং) জোয়ার, ভাটা, সময়।
        —(ইং) তিষি, মুসিনা ব
         <u>-(ইং)</u> জন্ধ, জাঁধণা !
```

```
হাইণ্ড্ — (ইং) হরিণী।
চাইল্ড্ — (ইং) সন্তান।
গাইল্ড্ — (ইং) সন্তান।
চিচিণ্ড — (দেং) ফল বিং, চিচিন্ধা।
পিচিণ্ড — পশুর অব্যব, উদর।
সপিণ্ড — সনাভি, ৭ম পুরুষান্তর্গত জ্ঞাতি।
হুংপিণ্ড — হুদয়ন্থিত রক্তাদির আধার স্থান।
সাপিণ্ডা — সপিণ্ডতা, জ্ঞাতিত্ব।
হণ্ড— অন্তা। (৪) চতুরক্ষর।
প্রোভাইড্ — [ইং] যোগান দেওয়া, প্রস্তুত কর্রণ।
গানিছিড্ — [ইং] মউরি।
গপিছিড্ — [ইং] গোন্ড দানা।
আইলিড্ — [ইং] চক্ষের পাতা।
চ্যামারিগু — [ইং] তেঁতুল।
```

তকু পিও —টেকোর নিম্নস্থ মৃৎপিও,টেকোর বাঁটুল।

—স্পিও ভিন্ন ৭ম পুরুষেত্র পুরুষ।

७ शाहेल्फ् — [हेर] वरा ।

রক্তপিত —জবা ফুল।

অস্পিত্ত

म्मिलि अ

নেত্রপিণ্ড — বিড়াল, চক্ষুর্গোলক।

জড়ণিও — সুল জড় পদার্থ।

—প্রেড পিও।

```
উড—ভাম ।
         इंड-- शस्त्र। (६) शक्षाकता
চুইছাইড্ —[ইং] আলু হত্যা।
রোজিছাইড্—[ইং] রাজ হত্যা।
থেটি ছাইড্—[ইং] পিতৃ হত্যা।
মেট ছাইড্ —[ইং] মাতৃ হত্যা।
মপ্তার্ডছিড — ইং সরিষা।
ক্যাযিনছিড্ — [ইং] জিরা।
          इंड-जन्छ। (७) यङ्कत।
कुरेन्ট-बारेफ् —[रेर] (हेता।
ওয়ান-আইড্ — [ইং] কাণা।
ফেটারছাইড্ —[ইং] ভাতৃহস্তা।
 . ইড—গন্ত। (৭) সপ্তাক্ষর।
ইনফ্যানট্ৰছাইড্ — ইং বালক হত্যা।
त्कातिदब्र छ। तिष्ठ चिर्] थन्त्रा, धनिशा ।
      উড—অন্ত। (২) দ্ব্যক্ষর।
উড् —[हर] कार्ष, जन्न ।
খুড্ — [ধা] ভেদ-খোড়ন, খোড়িত, খোড়ক
গুড্ —[ইং] উত্তম।
कुछ — हिरो थाना, अना
```

উও্ —[ইং] আঘাত, চোট।

কুণ্ড — সীবৎপতিকা স্ত্রীর জারজ পুত্র

কুড্য —ভিত্তি, দেওয়াল, কৌতুহল,ব্যপ্রতা,বিলেপন

[486] উড-অম্ব। छड़, प्रश्नना, ज्न विर, पूर्व, कश्चरत नाजा, नम्लाडे, 29 49 निलब्ज, प्रश्ना विश [४।] जाएं। कृ क्रा । - खगत्। যুগু —চে° ড়া সাপ 1 ডুগু তুগু — মুখ, ওষ্ঠাধর, চঞ্চা পুঞ — जिलक, (काँछा, छिश्। নুখ, শিরঃ, দৈত্য বিং, স্থানু রুক্ষ, রাভ্থাহ, मुख নাপিত, লৌহ, মণ্ডিত। [ধা] মুড়ন, পীড়ন। -ক্বন্ধ, মন্তক হীন কলেবর। রুত लूख —[ধা] চুরি করা। 🗝 করি হস্ত, হাতীর শুঁড়। —ব্যান্ত, গ্রাম্য শূকর, মূর্থ, রাক্ষ্স, মেষ।

উড-অন্ত। (৩) ত্রাক্র। क्वांडेड् - [हेर] रमघ, वानन। পাউও — हिर ওজন বিং, খোঁয়াড়, অদ্ধমের। বরুড —নীচজাতি বিং। বারু ও -- অনন্ত,নৌকার জল সেচন পাত্র, কর্ণওচকুর্মল ভেরুত্ত —ভয়াবহ, গর্ভ ধারণ ট

সারুত্ত - সপের ডিম্ব, পথ, গোময় মণ্ডল। মীছণ্ড — সেহুণ্ডা রক্ষ, মনসা নিজ। जिश्रु — नना वेश्र मीर्घ (काँ गि), कशानश त्रशाज्य

উড—গন্ত। [৫৬৯] সপ্তাকর। উড — অন্ত। (৪) চতুরকার। जाित उन्ड - दिश पारी वाजि। আারভিন্ড - [ইং] চভুদিকে। —কামরূপস্থ সরোবর বিং। हक्कु छ অগ্নিকুগু — অগ্নি জ্বালনার্থ গর্ভ, চুলী। - विना খनरन छेरलम कल कूल, निर्वेत । দেবকুগু দিব্যকুও - কামরূপে কোভক পর্য্বতম্থ সরোবর বিং তামকুও —পূজার তাম পাল বিং। —শুক পাখী। বক্তুও বন্ধুত্ত —গরুড়,গৃধ্ব,গণেশ,গশক,উকুণ,ছারপোকা রক্ততুত্ত —শুক পাথী, লোহিতাস্ত। অস্থিতুত্ত —পক্ষী, বিহগ। —গন্ধ ভাদালিয়া লতা। গন্ধমু ও —ललार्छेत लमा काँछ।।

উড-ভান্ত। [৫] পঞ্চাক্ষর

অমৃতকুও — অমৃত কুপ, অমৃত কল্ম, অমৃত পাত্।

সপ্রছেশুও—র্শ্চিকবিং,যার প্রত্যেক শুণ্ডে ৭ গ্রন্থি। উড—অন্ত । (৭) সপ্তাক্ষর।

উড—গন্ত। (৬) ষড়কর।

जारसर्केक्ड —[हर] शथा।

ভপ্তপাষাণকুও-নরক বিং।

```
এড<del>—</del>খন্ত। [ ৫৭° <sup>*</sup>] ত্যকর।
          উড-शरा (b) अक्षेकता
চতৃদ্দশগ্রন্থিও—যাহার শুতে ১৪ গ্রন্থি আছে, কেরে।
          এড-অন্ত। (২) ঘ্যক্র।
ाँछ —(हेर) वावम।।
ডেড --(ইং) মৃত।
থেড্ ' —(ইং) সূতা।
त्माष्ड —(हेर) कोमानी।
तिष —(हेर) विष्यांगाः।
ব্রেড —(ইং) রুটী।
মেড • —(ধা) উন্মাদ, মোড়, মেড়ী [ইং] কত,
तिष —(हर) लाल वर्ग।
लिए -(हेर) गीगा।
শেড -(ইং) শেজ, একচালা ঘর।
হেড —(ইং) মস্তক, মাথা।
ছেও -(ইং) থেরণ করা।
ফেণ্ড —(ইং) মিত্র, বন্ধু !
```

মেও —হস্তিপক্, মাহুত, [ইং] মেরামত করা।
লেও —বিষ্ঠা, ন্যাড়, [ইং] কর্জ দেওয়া।

এড—অন্ত। (৩) ত্র্যক্ষর।
ছেকেও —(ইং) দ্বিতিয়, কাল, মিনিটের মৃষ্ট্যংশ।

ডিফেও -(ইং) রক্ষা করা, স্বপক্ষতা করা।

অ্যাছেও্ —(ইং) আরোহণ কর।।

ওড়—অন্ত। [৫৭১] এড-অন্ত। [৪] চতুরক্ষর। বেডপ্টেড্ —(हा) পালঙ্গ। त्रिष्टलष् -(हर) निम त। গডহেড্ --(ইং) ঈশ্রত্ব। ফোরহৈড-(ইং) কপাল। এড—অন্ত। (৫) পঞ্চাক্ষর। क्रांतिकारय़ (३१) वृत्त । কোয়াড়ুপেড্ —(ইং) চতুষ্পদ। ওয়ালশেড্ —(ইং) দেওয়াল গিরি। এউ-অন্ত। (৬) ষড়কর। (हायाहिएला (हर) गरकना। ওড—অন্ত। (২) দ্যকর। टोड् .-(३९) कहेकटे तक्। রোড -(ইং) রাজ পথ। लां —(हेश) ताका। ছোর্ড —(ইং) তলোয়ার। কোল্ড — (हेर) मिन्न, भी जल। গোল্ড্ —(ইং) সোণা, স্বর্ণ।

বোড - ফল विः, सुभाति, श्रवीक ।

७ ५ - পूष्प, जना कूल, द्वक्त निः, উৎक त्लत উ छताः ।

বোড় —গোনস সর্প, বোড়া সাপ, সংস্থা, মীন।
গোও —নাভিদেশে বৃদ্ধিত সাংস,গোড়,নীচজাতি বিং

অডা--অন্ত। [৫৭২] ওড-অন্ত। (৩) ত্রাক্ষর। गालां छा - शब्दीक। ওড-অন্ত। (৪) চতুরক্ষর। क्रांहितांक्ड्-(हर) थामा। गातिरशान्छ -(हेर) गाम। অঙ্গলোড্য — আদ্র ক, আদা, চিঞ্চাটক। উড-অন্ত। (২) ঘ্যকর। শেও — মত, মাতাল, অত্যাসক, খ্যাত। পৌগু –পুণ্ডু র্দেশ, ভীমের শহ্ব, পুঁ ড়ি আক উড—অন্ত। [৪] চতুরকর। দানশৌগু —অভিদাতা, বহুপ্রদ। পানশেভি —মদ্য পানায়ক্ত, পান রত, মাতাল। ডা। (১) একাকর। ডা —ডাকিনী, পিশাচী।

ডাং—(দেং) বাড়ি, যষ্ট্যাঘাত। অডা—অন্ত ৫(২) দ্ব্যক্ষর । গণ্ডা - সংখ্যা বিং, চারি কড়া। क्षा -- नाशिका विर, नमी विर, स्था मुक्ता। কণ্ডা —(দেং) পতাকা, ধ্বজা।

পণ্ডা —শাস্ত্র জ্ঞান, তীক্ষ্ণ বুদ্ধি, জগনাথের পুরোহিত यला - मिष्ठोत्र दि९, जामनकी, मना। রতা —বিধবা, রাঙ্, লতা বিং, মূষিকপণী।

```
চত্রকর।
 শগু।, —(দেং) মূর্থ অথচ বলবান, গোঁয়ার।
 হতা — হাঁড়া, দাসীকে সম্বোধন করিবার শব্দ।
            অডা-অন্ত। (৩) ন্যক্র।
 প্রচণ্ডা — ছুর্গার নায়িকা বিং, শ্বেত দুর্কা, ছুর্গার সখী।
 বিভগ্তা —কলহ, বিভর্ক, মিথ্যা বিচার, হাতা, কচু।
 धत्या - शिथूल, शिक्षली।
            অভা—অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
 রথক্ড্যা—রথ সমূহ।
 উগ্রচণ্ডা —অতিশয় কোপনা নারী, চণ্ডিকা দেবী।
 ত্রপারতা —বেশ্যা।
           আডা—গন্ত। (২) দ্ব্যক্র।
আড্ড। —(দেং) আখড়া, উত্তরণস্থান।
আও। —(যাং) ডিম, ডিম্ব।
ठी ७१ -- (तिर) भी छल, हिमं।
ঢাওা —(cদং) कष्ठे, मञ्जाপ, घूर्गाय्यमान, लाकमम्ड
পাণ্ডা —(দেং) দেব পূজক।
           আড়া—অন্ত। [৩] ত্রাক্ষর।
কাকাণ্ডা—কোলশিম্বীরক্ষ।
বারাতা —গৃহের गংলগ বহিঃ প্রকোষ্ঠ।
          আড।—অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
রক্তকাণ্ডা —রক্ত পুনর্বাগাক বিং'।
शांगको छ। — गछ मूर्का, त्राँट मूर्का।
```

```
[ 698 ]
                                  ছাক্র।
            ইডा—बस्र। (०) बाकात।
স্বণিতা-পিও খর্জুরী, পিণ্ডি খেজুর।
           উডा-जुछ। (३) क्राक्रत।
কুড্য।—ভিত্তি, দেওয়াল, কৌতৃহল, ব্যগ্রতা,বিলেপন।
छछ। -- लम्लाहे, लाका, पूर्व, छँड़ा, वनमाम्।
खु - मार्ग, त्या, भर्क, शकित खुँ फ, निनी, भरा-
      भाना, कृष्टेनी, जन इंखिनी।
            উডা তু গন্ত। (৩) ভ্রাকর।
हामुखा-द्रशा
মরুতা—উচ্চ ললাট যুক্তা কামিনী, উচ্কপালী।
           উডা-অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
मीर्घकुछा-इङ्क्मती, हूँ हा।
চর্মমুঞা - বাহার মন্তক ঢালাক্তি গোলাকার, তুর্গা।
হস্তিশুড়া-হাতিশুঁড়ার গাছ, হাতির শুঁড়।
```

ডি। (১) একাক্ষর। ভী—(ধা) নভো গমন–ডয়ন, উড্ডয়ন, ডীন, উড্ডীন। অভি—অন্ত। (২) দ্যক্ষর।

গত্তী — সণ্ডল, রেঁপ্লাদি ছারা গীমা বদ্ধস্থান, রামধন্ত।
চত্তি — [১ত্তী] গ্রন্থ বিং, ছুর্গা, অতি কোপনা স্ত্রী।

विष -(हर) महीत, आनाना आकरत्था विर ।

थडी - वनमूका।

গণ্ডি --গাছের গুঁড়ি।

```
[ 292 ]
দণ্ডী - যম, সম্যামী, পণ্ডিত বিং, নূপ, স্বারপাল
ভত্তি —ভিণ্ডী তরঙ্গ, মঞ্জিষ্ঠা রক্ষ, মঞ্জিষ্ঠা।
इछी - ग्रंदशांक तिर, डाँछी।
           অভি-অন্ত। (৩) ত্রাক্ষর
কাষ্টডি - হিং জিমা।
শিখণ্ডী —ময়র, জপদরাজ পুত্র, কুরুট, বাণ, শর।
वह छी - गातिका शकिनी, वर्डि, वार्डि, मेस विर ।
जिम छी - जिम गडमाती, मझागी विर, यरकाशवी छ।
কর্ত্তী —মৎস্থা বিং, করণড বিশিষ্ট।
চির্ভী —পিত গৃহস্থিত। কামিনী, বালিক।।
পাষ্ডী - নাস্থিক, বিধন্মী, পাপী, পামর।
মংস্তা-খণ্ড বিকার, মিছরি, নবাত, মঠ প্রভৃতি।
           অভি-অন্ত। (৪) চতুরক্ষর।
কুলচভী —বিপত্তি নাশিনী, কুলই চভী।
म अमिडी - शतम्भत यष्टि घाता यूक, नाठालाठि।
राष्ट्रमधी - हेल, भक ।
           অডি-অন্ত। (৫) পঞ্চাকর।
চিত্রশিখণ্ডী-মরীচি-গত্রি-সঙ্গিরাদি সপ্ত ঋষি।
           .আডি-অন্ত। (२) ঘ্যক্ষর
 প্যাডি-[ইং] ধারা।
 वाणी - हिरी ममा निर।
```

```
ইডি-অস্ত। (৫৭৬
ভাত্তি -- नाशिरलत कृतामित वाधात, ভाँ ।
तां श्री —[(मर] विधवा, यातवनिष्ठा, खीरलांक।
           আডি-অন্ত। (৩) ত্রাকর।
কাকাণ্ডী—মহাজ্যোতিখতী নতা।
সুকাতী - জমর, অলি, ষট্পদ,মধুবত।
भीगाछी — गर्कता, हिनि।
          আডি—গন্ত। (৪) চতুরক্ষর
উষ্টকাত্তী - রক্ত বর্ণ পুষ্প বিং।
 কাকভাণী-মহাকরঞ্জ রক্ষ।
           আডি—অস্ত। (৫) পঞ্চাক্ষর
 ছুগারক্যাণ্ডি—[ইং] মিছরি।
             ইডি-অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।
 পিণ্ডি-পিণ্ডী] খেজুর গাহ, অলাবু, ভক্ষা ধিণ্ড
          পায়ের ডিম, চক্রের মধ্যভাগ।
 হিণ্ডি — অস্থি বিং, পুরুষ, বার্ডাকু, সমুজাদির কেন
 হিত্তী — ছুর্গা, পার্কভী।
  विल्डिः --[हेर] मालान, अपेलिका।
              ইডি-ছান্ত। (৩) ত্রাক্র।
```

চিরিগু—চিরপিতৃগৃহবাদিনী কুমারী বা বিবাহিত। গ্রী ইডি—অস্ত । (৪) চতুরক্ষর।

बातिशिकी-परनी, घटतत हाँहेर, कोकाटवेत कार्व।

শূকপিণ্ডি—[শূকপিণ্ডী] আলকুশী লতা।

```
[ @99 ]
           উডি-অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।
তুত্তি-- আন্য, চঞ্ , নাভি।
মুত্তি—নাপিত, (দেং) গোলাকৃতি কুদ্র সন্দেশ বিং।
नूखी- একত বেষ্টিত স্ত্রাদি, লুড়ী, লুট।
শুণ্ডী—ত ড়ী, সুরা প্রস্ততকারক, হস্তী।
ছ ভী—(দেং) অর্থ সম্বন্ধীয় টাকার চিঠি।
          উডি—অন্ত। (০) ত্রাকর।
নিপ্ত ভী -নীল সেফালিকা-নিশ্ধ বার-নিনিন্দা গাছ।
 काज़ छी — जलिका, छोक।
 ভূশুত্তি — লাখেরাস্ত্র বিং।
            উডি—মন্ত। (৪) চতুরকর।
 চক্তৃতী —शहाम्तत्र मूथ मधनाकात-नान्धि मरक ।
 খ্ৰাঙ্কতৃ গী—কাকনাদ। নামক লতা।
 ক্লোগতুতী —বাইন মংল্য।
 পঞ্চমুণ্ডী —উপাসনা স্থান বিং।
  কুরমুত্তী —নাপিত।
```

ভডি—গন্ত। (২) দাক্র।

লড় —হতভাগা, তুশ্চরিত্র, নীচ ব্যক্তি, লাড়।

অভু—অন্ত। (२) দাকর।

শৌতী — জাতি বিং, শু ড়ি।

मुख्य - वामा यक्त विर ।

गोछी - लिश्रनि, लिश्रन।

```
এডু-অস্ত। [ ৫৭৮ ]
কণ্ডু — [কণ্ডু] চুলকনা, পাঁচড়া, সড়সড় করা।
গণ্ডু —[গণ্ডু] উপাধান, বালিশ, প্রন্থি।
চত্র — ই কুর, বানর, (দেং) মাদক দ্রব্য বিং।
তত্তু —শিবের দ্বারপাল বিং।
            অডু—অন্ত। (০) ত্রাকর।
 দোর্গড় -কুঠিত হস্ত, কুপো, বক্রহন্তু !
স্কণ্ড্ —[স্কণ্ড্] চুলকনা, চক্ষুরোগ প্রভৃতি।
মুক তৃ — সাক্তের মুনির জনক।
 চক্রগগু-চক্রাকার উপাধান, গোল বালিশ।
           আড়ু—অস্ত। (২) ব্যক্র।
 পাণ্ডু -- রাজা বিং, নেবা রোগ, বর্ণ-হন্তী বিং।
            আডু—অন্ত। (৩) ত্র্যকর।
 পলাণু—পেঁয়াজ।
            উড्— अस । (२) भाकत +
 উড় —তারা, নক্ষত্র, জল।
 युख् — मल, त्यानी।
           উড্—অন্ত। [৫] পঞ্চাকর।
 আকুণ্ডকুণ্ডু —(দেং) বিবাদ রদ্ধি, ঘোরতর কলহ।
             এড়-জন্ত:। (२) দ্বাক্ষর।
 গেগু —কন্ত্ৰক, ভাটা ৷
             এড়—অন্ত। (০) ত্রাকর !
 গবেড়- শান্য বিং,তৃণ ধান্য, গড়গড়ি ধান,বরবটী,মেঘ
```

```
তাচ—অন্ত। [ ৫৭৯ ] ত্রাক্ষর।

তে লন্ত। ইংরেজি দিন বাচক শব্দ।

তে —দিন! ছ্যাটার্ডে —শনিবার।

ছণ্ডে —রবিবার। ওয়েডনেচ্ডে—রুধবার।

মণ্ডে —গোমবার। ইয়েচটার্ডে—পরশু।

থাচ্ডে —রহম্পতিবার। ফুাইডে —শুক্রবার।

টুইচ্ডে —মক্ষল বার। টুডে —অদ্য।

ইডো—অন্ত। (২) ত্রাক্ষর

উইডো—(ইং) বিধবা। উইণ্ডো—(ইং) জানালা।

ত। (১) একাক্ষর।

তল্ভান কুরুর, কুরুর লাঙ্গুল, সর্প, ণিগুল, ধ্বনি

ইহাতে যজ্জেশ, অদ্ধনারী হ্বর,বিনায়ক, শ্বাহি বুঝার

অচ—অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

শণ্ড—অন্তঃপুর জীরক্ষক,বর্ষবর,নপুংসক,মাতাল,মাড়।
```

আঢ—অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

. আঢ়—অন্ত। (৩) ত্র্যকর।

यक -क्रीव, नशूरनक ।

আত্য —যুক্ত, ধনবান্, পূর্ণ, সম্পন্ন। দার্ত্য —হৈহ্ব্য, কাঠিন্য, দৃঢ়তা।

ভাগাত্য — দরিজ, নিংস্ব।

धनाण-धनवान।

ভটি—অন্ত। [৫৮০] দ্বাক্ষর।

ছরাচ্য —দরিদ্র, গরিব।

ছলাচ্য —পাতলা কাদা, নদীগার্ভস্থ কর্দ্ধম, দলদলিয়।।

বসাচ্য —শুশুক, শিশুমার।

সিংহাচ্য—যে স্থলে অনেক সিংহ আছে।

ভট—অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

চুণ্ড —(ধা) অস্বেষণ, চুণ্ডন, চুণ্ডিত।

দুচ্য —অধ্য, নীচ, পামর।

এচ—অন্ত। (২) দ্বাক্ষর।

মেচু —শিশ্ধ, পুরুষোপস্থ, মেষ, ভেড়া। মেচ —মেষ, ভেড়া। আচা—সম্ভ। (৩) ছাক্ষর।

সোদাত্যা—যবানী, জোয়ান।
উতি—য়ন্ত। (২) ছাক্ষর।

চুণ্টি—গণেশ। (৪)

১ম থণ্ড সমাপ্ত।

